



EXAM GURU TIPS AND TRICKS

Educational YouTube Chanel

HINDI

Chapter wise and important One-liner Question

–: **Exam Cover** :–

- ★UPP & UPSI Exam★
- ★UPSSSC Exam★
- ★CTET/UPTET Exam★
- ★UPPSC and Other Exam★

"मेहनत इतनी खामोशी
से करो की **कामयाबी**
शोर मचा दे!"

By – Sudhir Gupta

किसी भी प्रकार की सहायता के लिए

- ✓ Insta – <https://www.instagram.com/examgurusudhir1>
- ✓ E-mail Id – examguruofficial@gmail.com
- ✓ Telegram – t.me/examgurusudhir

आखिर क्यों,

Exam Gure Tips and Tricks की pdf Best है?

अगर जो आपने ये pdf खरीदा है तो मैं आपको ये पूरा भरोसा दिलाना चाहूंगा कि आपने सही चुना है क्योंकि इस Notes में सबसे सरल भाषा में आपको समझने में आसानी होगी साथ में अध्याय खत्म होते ही उस अध्याय से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्न आपको देखने को मिलते हैं जो आपकी तैयारी में चार चाँद लगा देते हैं व आपको पता चलता है कि प्रश्न कहा से पूछे जाते हैं। अगर आप इससे बेहतर पढ़ना चाहते हैं तो हो सके इसा Printout निकलवा ले या Notes खुद का इसे देखकर बना ले।

हमने इसमें कुल 21 अध्याय बनाये हैं व इसे 45 दिन का कोर्स सोच कर आप पढ़ोगे व तैयारी करोगे व Video के लिए आप Exam Gure Tips and Tricks YouTube Chanel के साथ जुड़े।

यह हमारा विश्वास है कि इस Pdf Note से आपको हर Exam जिसमें भी हिन्दी पूछी जाती है उसके लिए अच्छी तैयारी हो जायेगी।

अच्छी किताबे,
और
अच्छे लोग.....!
तुरंत समझ में नहीं आते,
उन्हें पढ़ना पड़ता है...

विषय सूची

1. हिन्दी भाषा.....	4
2. वर्णमाला.....	12
3. शब्द भेद	19
4. विराम चिन्ह	24
5. वाक्य रचना	26
6. उपसर्ग – प्रत्यय	30
7. सन्धि	32
8. समास	37
9. कारक	39
10. रस	43
11. अलंकार	49
12. छन्द	55
13. संज्ञा	61
14. सर्वनाम	64
15. क्रिया	66
16. विशेषण	69
17. लिंग	71
18. वचन	74
19. पत्र लेखन	75
20. हिन्दी साहित्य	83
21. पुरस्कार	86

हिन्दी भाषा

भाषा शब्द संस्कृत के भाष धातु से बना है जिसका अर्थ है – बोलना
भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर, व पढ़कर अपने मन के भाव व विचार का आदान-प्रदान करता है।

भाषा के प्रकार – भाषा के तीन प्रकार होते हैं –

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

मौखिक भाषा – टेलीफोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि।

विशेषताएं –

- भाषा का अस्थायी रूप है।
- उच्चारित होने के साथ ही यह समाप्त हो जाती है।
- वक्ता तथा श्रोता प्रायः एक दूसरे के सामने होते हैं।
- यह भाषा का मूल या प्रधान रूप है।
- इस रूप की आधारभूत इकाई 'ध्वनि' है।

लिखित भाषा – जिन अक्षरों या चिन्हों की सहायता से हम अपने मनके विचारों को लिखकर प्रकट करते हैं उन्हें लिखित भाषा कहते हैं। जैसे – पत्र लेख, पत्रिका, समाचार पत्र, कहानी, जीवनी, संस्मरण आदि।

विशेषताएं –

- यह भाषा का स्थायी रूप है।
- इसमें हम अपने भावों व विचारों को अन्नत काल तक सुरक्षित रख सकते हैं।
- इसमें जरूरी नहीं की वक्ता श्रोता आमने सामने हो।
- इस रूप की आधारभूत इकाई 'वर्ण' है।
- यह भाषा का गौण रूप है।

भाषा के विविध रूप

1. बोलिया
2. परिनिष्ठ भाषा
3. राष्ट्र भाषा

हिन्दी भाषा का उद्भव –

हिन्दी भाषा का उद्भव प्राचीन आर्य भाषा (संस्कृत) से हुआ है।

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

संस्कृत (1500 ई०पू० – 500 ई०पू०)



पाली (500 ई०पू० – 1 ई०)



प्राकृत (1 ई० – 500 ई०)



अप्रभंश (500 ई० – 1000 ई०)



अवहट्ट (900 ई – 1100 ई०)



हिन्दी

भारत में भाषा परिवार – भारत में 4 भाषा परिवार है –

1. भारोपीय – 73%
2. द्रविण – 25%
3. आस्ट्रिक – 1.3%
4. चीनी तिब्बती – 0.7%

अप्रभंश से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास –

अप्रभंश के भेद

शौरसेनी अप्रभंश

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

पश्चिमी हिन्दी

	राजस्थानी
	गुजराती
अर्द्ध मगधी अप्रभंश	पूर्वी हिन्दी
मगधी अप्रभंश	बिहारी, उड़िया, बाग्ला, असमिया
खश अप्रभंश	पहाड़ी हिन्दी
बाचड़ अप्रभंश	सिंधी पंजाबी
महाराष्ट्री अप्रभंश	मराठी

प्रमुख भाषा बोलिया व उनसे सम्बन्धित क्षेत्र –

भाषा	बोलिया	क्षेत्र
राजस्थानी	जयपुरी/ ढुढारी	पूर्वी राजस्थान
	मारवाड़ी	पश्चिमी राजस्थान
	मेवाती	उत्तरी राजस्थान
	मालवी	दक्षिणी राजस्थान
पश्चिमी हिन्दी	खड़ी बोली/ कौरवी	गाजियाबाद, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, मेरठ, बुलन्दशहर, सहारनपुर, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली, हापुड़, अमरोहा, सम्भल, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, कैराना आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, हाथरस, कासगंज, एटा, मैनपुरी, बदायु बरेली आदि।
	ब्रज	कन्नौज, इटावा, औरैया, कानपुर, फर्रुखाबाद,
	कन्नौजी	

	बुन्देली	शहारनपुर, पीलीभीत हरदोई आदि । झांसी, ललितपुर, जालौन, उरई, चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, महोबा, आदि । हरियाणा से सटे कुछ जिले उन्नाव, फतेहपुर, लखनऊ, अमेठी, बारांबकी, फैजाबाद, अयोध्या, गोंडा, बलरामपुर, मिर्जापुर, श्रवस्ती, बहराइच, कौशाम्बी, इलाहाबाद, लखीमपुर, सीतापुर, सुल्तानपुर, आदि । इलाहाबाद, बाँदा, चित्रकूट, मिर्जापुर, सोनभद्र आदि । छत्तीसगढ़ से सटे UP के कुछ जिले ।
पूर्वी हिन्दी	हरयाणवी / बांगरू अवधी	
	बघेली	
	छत्तीसगढ़ी	
बिहारी हिन्दी	भोजपुरी	वारणसी, बलिया, मऊ, आजमगढ़, गाजीपुर, जौनपुर, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज, चंदौली, बस्ती, संतकबीर नगर, सिद्धार्थनगर आदि । बिहार के कुछ क्षेत्रों में हिमांचल व उत्तराखंड के क्षेत्र में
पहाड़ी हिन्दी	मैथिली / मगही गढ़वाली कुमाउनी	

राजभाषा (Official Language): राजभाषा का शाब्दिक अर्थ है –

‘राजकाज की भाषा’ जो भाषा देश में राजकीय कार्यों के लिए प्रयुक्त की जाती है उसे हम राजभाषा कहते हैं।

राजभाषा एक संवैधान शब्द है हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को ‘हिन्दी दिवस’ के रूप में मानते हैं।

राजभाषा

भाग – 17 (Art- 343-351)

अध्याय – 1 संघ की भाषा

Art 343 – संघ की राजभाषा – संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी होगी।

Art 344 – राजभाषा के संबन्ध में आयोग।

(5 वर्ष के उपरान्त राष्ट्रपति द्वारा)

(10 वर्ष के उपरान्त संसद समिति के द्वारा)

अध्याय – 2 प्रादेशिक भाषाएं

Art 345 – राज्य की राज्यभाषा या राज्यभाषाएं प्रादेशिक या हिन्दी (व्यवस्था न होने पर अंग्रेजी)

Art 346 – एक राज्य व दूसरे राज्य के बीच पत्र आदि की राजभाषा

Art 347 – किसी राज्य की जनसंख्या के किसी अनुभाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के सम्बन्ध में।

अध्याय – 3 SC/HC आदि की भाषा

Art 348 – SC व HC में और संसद व राज्य विधानमंडल में विधेयक व अधिनियमों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

Art 349 – भाषा से सम्बंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया (राजभाषा संबंधी कोई भी विधेयक राष्ट्रपति के पूर्व मंजूरी के बिना पेश नहीं की जा सकती)

अध्याय – 4 विशेष निर्देश

Art 350 – व्यथा के निर्धारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा (किसी भी भाषा में)

भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं
भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी नियुक्ति (राष्ट्रपति के द्वारा)

Art 351 – हिन्दी के विकास के लिए निर्देश

8वीं अनुसूची -

भाषाएं – 8वीं अनुसूची में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 प्रादेशिक भाषाओं का उल्लेख है।

इस अनुसूची में आरम्भ में 14 भाषाएँ थीं।

- | | | |
|------------|-------------|------------|
| 1. असमिया | 2. बांग्ला | 3. गुजराती |
| 4. हिन्दी | 5. कन्नड़ | 6. कश्मिरी |
| 7. मलयालम | 8. मराठी | 9. उड़िया |
| 10. पंजाबी | 11. संस्कृत | 12. तमिल |
| 13. तेलुगू | 14. उर्दू | |

- 21वें संविधान संसोधन 1946 में – सिंधि
- 71वें संविधान संसोधन 1992 में – कोकणी, मणिपुर, नेपाली
- 92वें संविधान संसोधन 2003 में – बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष – जी बी खरे

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है – **हिन्दी**
- भारत में दूसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा – **बांग्ला**
- भारत में तीसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा – **तेलुगू**
- द्रविण परिवार की जननी भाषा – **तेलुगु**
- देवों की भाषा – **संस्कृत**
- उर्दू शब्द किस भाषा का है – **तुर्की**

- मुगल काल में किस भाषा को रेक्ता कहा जाता था – **उर्दू**
- दक्षिण भारत की प्राचीनतम भाषा – **तमिल**
- भारत के किस राज्य में अंग्रेजी भाषा में काम होता है – **नागालैण्ड**
- भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भाषा है – **भारोपीय परिवार**
- कोकणी भाषा बोली जाती है – **गोवा व महाराष्ट्र में**
- संस्कृत कहा की उपभाषा है – **उत्तराखंड**
- उर्दू कहा की उपभाषा है – **उत्तर प्रदेश**
- भारत की प्राचीनतम भाषा – **संस्कृत**
- शुद्ध हिन्दी खड़ी बोली का केन्द्र – **मेरठ**
- शुद्ध हिन्दी खड़ी बोली का मूल नाम – **कौरवी**
- ब्रज बोली का मुख्य केन्द्र है – **मथुरा**
- भोजपुरी का शेक्सपीयर कहते हैं – **बिहारी ठाकुर**
- भारत की सभी विधिया निकलती है – **ब्राह्मी विधि से**
- पंजाबी भाषा की विधि है – **गुरुमुखी**
- हिन्दी शब्द किस भाषा का है – **फारसी इरानी भाषा**
- हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है – **देवनागरी**
- ब्रजबुलि नाम से जानी जाती है – **पुरानी बांग्ला**
- भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान है – **अनुच्छेद 343-351**
- हिन्दी की आदि जाननी है – **संस्कृत**
- हिन्दी खड़ी बोली किस अप्रभंशसे विकसित हुई – **शौरसेनी**
- भाषा के आधार पर भारतीय राज्यों का पुनर्गठन हुआ – **1956**
- भाषाई आधार पर सर्वप्रथम किस राज्य का गठन हुआ – **आन्ध्र प्रदेश**
- हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया – **14 सितम्बर 1949**

- तुलसीदास जी ने राम चरित मानस लिखा – **अवधी भाषा**
- पद्मावत की रचना हुई – **अवधी भाषा में**
- प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ – **नागपुर (1975)**
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष – **जी. बी. खरे।**
- पृथ्वी राज रासो किस काल की रचना है – **आदि काल**
- आल्हा के रचयिता कौन है – **जगनिक**
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष थे – **बी. जी. खरे**
- हंस पत्रिका के सम्पादक थे – **प्रेमचन्द्र**
- मानक हिन्दी का आधार क्या है – **खड़ी बोली**
- हिन्दी की सर्वप्रथम प्रकाशित समाचार पत्र का नाम था – **उदित मार्तण्ड**
- सरस्वती पत्रिका का सम्पनादन किसने किया – **महावीर प्रसाद द्विवेदी**
- हिन्दी के प्रथम गद्यकार थे – **लल्लू लाल**
- मृगावती के रचनाकार है – **कुतुब**
- रानी केतकी की कहानी के रचनाकार है – **इंशा अल्हा खां**
- ब्रज बुली नाम से किस भाषा को जाना जाता है – **पुरानी बांग्ला**
- नाथ पंथ के प्रवर्तक माने जाते हैं – **महेंदर नाथ**
- बड़ी बोली के प्रथम लोकप्रिय कवि हैं – **अयोध्या सिंह उपाध्याय**
- हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है – **प्रिय प्रवास**
- भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में राजभाषा का प्रावधान है – **343-351**
- महात्मागांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय कहा है – **वर्धा**
- भाषा का जादूगर किसे कहा जाता है – **शिव पुजन सहाय**
- सिधी भाषा का उद्भव हुआ है – **ब्राचड़ अप्रभंश से**
- अवधी का उद्भव किस अप्रभंश से हुआ है – **अर्द्धमागधी**
- राम चरित मानस किस भाषा में लिखा गया – **अवधी**

वर्णमाला

भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है, इस ध्वनि को ही वर्ण कहते हैं। अर्थात् वर्ण वह छोटी से छोटी इकाई/ध्वनि है जिसके टुकड़े नहीं हो सकते हैं।

वर्णमाला – वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। लेखन के आधार पर 52 वर्ण हैं

13 स्वर + 35 व्यंजन + 4 संयुक्त व्यंजन

नोट – 33 मूल व्यंजन + 2 उत्क्षिप्त व्यंजन + 2 आयोगवाह + 4 संयुक्त व्यंजन + 11 स्वर = 52

वर्णमाला के भेद –

1. स्वर

2. व्यंजन

स्वर वर्ण – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ औ

अयोगवाह – अं, अः

	क	ख	ग	घ	ङ	11
	च	छ	ज	झ	ञ	2
						25
स्पर्श वव्यंजन	ट	ठ	ड	ढ	ण	4
	त	थ	द	ध	न	4
	प	फ	ब	भ	म	4
						2
अन्तःस्थ व्यंजन	य	र	ल	व		52
उष्म व्यंजन	श	ष	स	ह		
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
द्विगुण व्यंजन	ड़	ढ़				

स्वर

जिन वर्णों को स्वतन्त्र रूप से बोला जा सके उसे स्वर कहते हैं। परम्परागत रूप से इनकी संख्या 13 मानी गई है लेकिन उच्चारण की दृष्टि से केवल 10 स्वर हैं।

उच्चारण के आधार पर स्वर –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

लेखन के आधार पर स्वर –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ऋ

लेखन के आधार पर स्वरों के भेद –

मूल स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऋ

संयुक्त स्वर – ऐ (अ+ए), औ (अ+ओ)

स्वरों का वर्गीकरण –

1. मात्रा व उच्चारण काल के आधार पर –

ह्रस्व स्वर – इसके उच्चारण में कम समय लगता है।

जैसे – अ, इ, उ।

दीर्घ स्वर – उच्चारण में ह्रस्व स्वर से अधिक समय लगता है –

जैसे – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

प्लुत स्वर – उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी ज्यादा समय लगता है।

जैसे – राऽऽम, ओऽम

2. जीभ के प्रयोग आधार पर –

अग्र स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग काम करता है या जिह्वा का अग्र भाग उपर की ओर उठता है अग्र स्वर कहलाती है –

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

मध्य स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग काम करता है या उच्चारण में जीभ समान अवस्था में रहती है मध्य स्वर कहलाती है।

जैसे – अ

पश्च स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पश्चभाग काम करता है पश्चस्वर कहलाती है।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ

3. मुख द्वार खुलने के आधार पर –

विवृत – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है।

जैसे – आ

अर्द्ध विवृत – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है

जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

अर्द्ध संवृत – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बन्द रहता है।

जैसे – ए, ओ

संवृत स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बंद रहता है।

जैसे – इ, ई, उ, ऊ

4. **होठों की स्थिति के आधार पर –**

अवृत मुखी – जिन स्वरों के उच्चारण में ओठ वृन्तमुखी या गोलाकार नहीं होते हैं

जैसे – अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

वृत मुखी – जिन स्वरों के उच्चारण में ओठ वृन्तमुखी या गोलाकार होते हैं –

जैसे – उ, ऊ, ओ, औ, ऑ

5. **हवा के नाक व मुह से निकलने के आधार पर –**

निरानुनासिक / मौखिक स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में हवा के बल मुह से निकलती है।

जैसे – अ, आ, ई

अनुनासिक स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुंह के साथ – 2 नाक से भी निकलती है।

जैसे – अँ, आँ, ईँ आदि

6. **घोषत्व (स्वर तंत्रियों में कंपन) के आधार पर –**

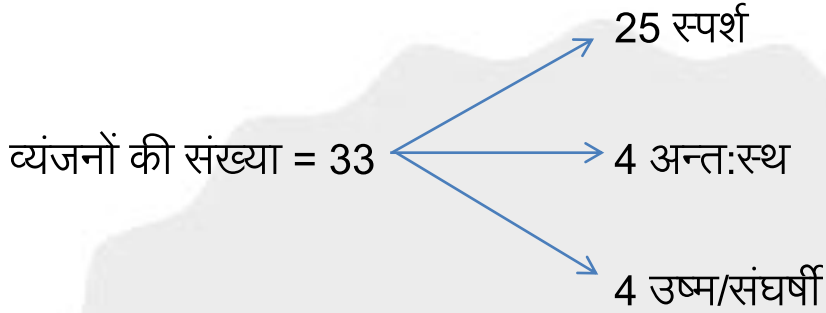
अघोष – वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन या घर्षण नहीं होता अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं।

सघोष ध्वनि – स्वर तंत्रियों में कंपन/ घर्षण होता है। सभी स्वर सघोष ध्वनी होती हैं।

व्यंजन

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख से अबाध गति से नहीं निकलती उसमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध होता है व्यंजन कहलाती है।



व्यंजनो का वर्गीकरण –

स्पर्श व्यंजन – जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का कोई ना कोई भाग मुख के किसी न किसी भाग को स्पर्श करता है, स्पर्श व्यंजन कहलाता है।

क से लेकर म तक 35 स्पर्श व्यंजन हैं।

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
प	फ	ब	भ	म

घोषत्व के आधार पर वर्गीकरण –

अघोष – वे ध्वनि जिनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में घर्षण/ कंपन नहीं होता है।

(वर्ग का पहला व दूसरा व्यंजन)

सघोष/घोष – जिन ध्वनि के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कमपन हो

(वर्ग का तीसरा, चौथा व पांचवा व्यंजन)

प्राणत्व के आधार पर –

अल्पप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले या स्वास वायु की मात्रा कम लगती है अल्पप्राण ध्वनि कहलाती है

(वर्ग का 1, 2, 5 व्यंजन)

	स्पर्शी	अन्तःस्थ	उष्म	स्वर	
कठ्य	क ख ग घ ङ			अ, आ	ए, ऐ
तालव्य	च छ ज झ ञ	य	श	इ, ई	
मूर्धन्य	ट ठ ड ढ ण	र्	ष्	ऋ	
दंतव्य	त थ द ध न	ल्	स्		व
ओष्ठ	प फ ब भ म			उ, ऊ	

- कंठ + ओष्ठ – ओ, औ
- कंठ + तालव्य – ए, ऐ
- दंत + ओष्ठ – व

उच्चारण के आधार पर व्यंजनो का वर्गीकरण –

अनुनासिक – ङ, ञ, ण, न, म (हर वर्ग का 5वां अक्षर)

पार्श्विक – ल

प्रकम्पित/ लुण्ठित – र

अर्द्ध – य, व

उक्षिप्त – ङ, ढ

गृहित – ज, फ

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- भाषा की सबसे छोटी इकाई है – **वर्ण**
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को कहते हैं – **वर्णमाला**
- हिन्दी वर्ण में स्वरों की संख्या होती है – **11**
- हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या होती है – **33**
- हिन्दी वर्णमाला में अयोगवाह वर्ण कौन से हैं – **अं, अः**
- उष्म/संघर्षी व्यंजन कौन से व्यंजन होती है – **श, ष, स, ह**
- अन्तःस्थ व्यंजन कौन से हैं – **य, र, ल, व**
- अनुनासिक व्यंजन होते हैं – **ङ, ञ, ण, न, म (हर वर्ग का 5वां अक्षर)**

- पार्श्विक ध्वनि कौन सी है – **ल**
- उक्षिप्त व्यंजन कौन – 2 से होते हैं – **ड़, ढ**
- 'क्ष' वर्ण किसके संयोग से बना है – **क् + ष**
- त्र वर्ण किसके संयोग से बना है – **त् + र**
- झ वर्ण किसके संयोग से बना है – **ज् + ञ**
- श्रवर्ण किसके संयोग से बना है – **श् + र**
- काकल्य व्यंजन कहलाते हैं – **ह**
- संयुक्त व्यंजन कौन-2 से होते हैं – **क्ष, त्र, झ, श्र**
- ए, ऐ वर्ण क्या कहलाते हैं – **कठ-तालव्य**
- अनुनासिक का संबंध होता है – **नाक व मुह से**
- तालव्य व्यंजन होते हैं – **च, छ, ज, झ, ञ**
- जिन शब्दों के अन्त में 'अ' आता है उन्हें कहते हैं – **अकारांत**
- भाषा निर्माण की ईकाई का सही अनुक्रम है – **ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य**

TIPS AND TRICKS

शब्द भेद (KIND OF WORD)

शब्द – भाषा की लघुत्तम सार्थक इकाई

शब्द के प्रकार / वर्गीकरण – शब्दों का वर्गीकरण हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं

1. **रचना / बनावट / गठन के आधार पर**

- रूढ़
- यौगिक
- योगरूढ़

2. **उत्पत्ति / स्रोत / इतिहास के आधार पर**

- तत्सम
- तद्भव
- देशज
- विदेशज

3. **विकार / परिवर्तन के आधार पर**

- विकारी शब्द
- अविकारी शब्द

4. **अर्थ के आधार पर**

- एकार्थी
- अनेकार्थी
- समानार्थी
- विपरितार्थी

रूढ़ शब्द – वह शब्द जिसके सार्थक खण्ड नहीं हो सकते रूढ़ शब्द कहलाते हैं।

जैसे – पुस्तक, कलम, मेज, चावल आदि

यौगिक शब्द – वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड किये जा सकते हैं।

योगरूढ़ शब्द – वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से मिलकर बनते हैं किन्तु अपना सामान्य अर्थ छोड़कर किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं।

जैसे – लम्बोदर, मुरलीधर, गिरीधर, पंकज, नीलकंठ आदि ।

तत्सम् शब्द – वे शब्द जो सीधे-2 संस्कृत से आकर हिन्दी से प्रचालित हैं अर्थात् संस्कृत के समान हैं ।

जैसे – कृषक, अग्नि, नासिका, कर्ण, हस्त, पृष्ठ आदि ।

तद्भव शब्द – वे शब्द या ऐसे शब्द जो हिन्दी भाषा में जनमानस में सामान्य रूप से बहुप्रचलित हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति तो संस्कृत से हुई है लेकिन हिन्दी तक आते आते इनका रूप बिगड़ गया या अप्रभंषित हो गये ।

जैसे – किसान, आग, नाक, कान, हाथ आदि ।

देशज शब्द – ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति का पता ना चले कि वे आये कहा से तो ऐसे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं ।

जैसे – थरिया, लुटिया, खटिया, डिबिया आदि
अनुकरणात्मक शब्द भी देशज होते हैं ।

अनुकरणात्मक शब्द – वे शब्द जिसमें एक जैसी ध्वनि या समान ध्वनि रिपिट हो ।

जैसे – खटखटाना, चहचाहाना, हिनहिनाना आदि

विदेशज शब्द – वे शब्द जो विदेशी भाषा से आकर के हिन्दी में हिन्दी की तरह प्रचलित हैं ।

जैसे – पेन, पिसिल, स्टेशन, ट्रेन, वोट आदि ।

तत्सम - तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
घोटक	घोड़ा	उपाध्याय	ओझा
स्फूर्ति	फुर्ती	चन्द्र	चौद
गोधूम	गेहूं	कर्म	काम
मुख	मुँह	कृष्ण	कान्ह
अश्रु	आँसू	कार्य	काज
अंधकार	अधेरा	अक्षर	अच्छर

कुक्कुर	कुत्ता	परीक्षा	परीछा / परख
क्षीर	खीर	दुग्ध	दूध
मयूर	मोर	आशीष	असीस
श्वेत	सफेद	कोटि	करोड़
भ्रातृजाय	भौजाई	अक्षि	आँख
मेघ	मेह	काकः	कौआ
भ्रम	भौरा	क्षेत्र	खेत
ज्येष्ठ	जेठ	दक्षिण	दाहिना
स्कन्ध	कन्धा	कंकण	कंगन
कदली	केला	विभूति	भभूत
प्रस्विन	पसीना	मृत्यु	मौत
कर्पास	कपास	ग्रामीण	गँवार
कर्ण	कान	साक्षी	साखी
श्रावण	सावन	भक्त	भगत
भ्रू	भौंह	मक्षिका	मक्खी
बंसी	बांसुरी	वत्स	बच्चा
द्विवर	देवर	दुग्ध	दुध
कोकिला	कोयल	वानर	बन्दर
दर्शन	दरसन	अंगप्रौक्षा	अंगोछा
उत्साह	उछाह	उलूखल	ओखली
कृष्ण	किसन	क्रुद्ध	क्रोधि
गृध	गिद्ध	चर्तुदश	चौदह
युक्ति	जुगति	त्वरित	तुरंत
दधि	दही	गो	गाय
स्नेह	नेह	भगिनी	बहिन
बलीवर्द	बैल	भादौ	भाद्रपद

भक्त	भगत	श्रेष्ठी	सेठ
श्वसुर	ससुर	श्यामल	साँवला
अष्टादश	अठारह	अद्य	आज
उज्जवल	उजाला	कुपुत्र	कुपूत
शब्द	सबद	संन्यासी	संयासी
सौभाग्य	सुहाग	वत्स	बछड़ा
प्राघूर्ण	पहुना	दर्शन	दरसन
शव	जौ	गर्दभ	गदहा
अक्षोट	अखरोट	उत्साह	उछाह
कंकण	कंगन	ग्राम	गाँव
गर्मिणी	गभिन	कोकिल	कोयल
गायक	गवैया	क्षार	खार
घट	घड़ा	चणन	चना
मण्डूक	मेढ़क	भागिनेय	भांजा
बुभुक्षा	भूख	वासगृह	बसेरा
पृष्ठ	पीठ	निमंत्रण	नेवता
दस्त्रिका	दाढ़ी	दिवेद्वी	दुबे
तड़ाग	तालाब	तीक्ष्ण	तीKe
यज्ञोपवित	जनेऊ	चौर्य	चोरी
मतस्य	मछली	सुचिका	सुई
श्मश्रु	मूछ	मिष्ठी	मिठाई
यमुना	जमुना	ग्राहक	गाहक
खर्पर	खप्पर	क्षतिय	खत्री
अट्टालिका	अटारी	श्रृंगाल	सियार
सपत्नी	सौत	हरिण	हिरन
अंगुलि	अंगुरी		

कुछ प्रमुख विदेशज शब्द

देशज (देश+ज) देश में जन्मा – ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गये उन्हें देशज या देशी शब्द कहते हैं।

(थैला, गड़बड़, पेट, पगड़ी, लोटा, टॉग, ठेठ, डण्डा आदि)

विदेशज शब्द (विदेश+ज) विदेश में जन्मा (आगत शब्द) –

मुस्लिम शासन के प्रभाव से आये
(अरबी, फारसी)

यूरोपीय कंपनियों के आगमन से
(अंग्रेजी, पुर्तगाली)

अरबी शब्द – अक्ल, अजब, अजायब, अजीब, असर, अल्ला, आदत, आदमी, इलाज, इनाम, इस्तीफा, इज्जत, इमारत, औरत, औलाद, कर्ज, कब्र, कसम, कसरत, किला, किताब, कुर्सी, खत, खबर, गरीब, जलसा, जहाज, जनाब, तकिया, तजुरबा, तारीख, हैजा, हाकिम, दवालात, शराब, वकील, लिफाफा, मौलवी, मौसम, मुकदमा, दुकान, दफ्तर, आदि।

फारसी शब्द – कबूतर, आईना, अफसोस, आबरू, आमदनी, आवाज, किशमिश, कुश्ती, खुराक, खरगोश, चश्मा, चादर, गोश्त, गुलाब, चाबुक, चिराग, जहर, जादू, जुरमाना, जोश, तबाह, दंगल, तनख्वाह, तरकश, नाक, सरकार, सरदार, मुर्गी, पैमाना, पलंग, दुकान, दीवार, दवा, मुफ्त आदि।

पुर्तगाली – बाल्टी, फीता, तम्बाकू, अल्मारी, आल्पीन, अलकतरा

अंग्रेजी शब्द – अफसर, इंजन, बोटल, पुलिस, आडर, कलेक्टर, टेसन, कप्तान, अस्पताल आदि।

चीनी शब्द – चाय, लीची, चीकू, चीनी आदि।

जापानी शब्द – रिक्सा, सायोनारा आदि।

रूसी शब्द – रुबल, जार, मिग, बोदका, सोवियत, स्पूतनिक आदि।

विराम चिन्ह

विराम का अर्थ है – रुकना / ठहरना

वाक्य को लिखते या बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा बहुत रुकना पड़ता है, जिससे भाषा अर्धवान, स्पष्ट व भावपूर्ण हो जाती है।

लिखित भाषा में इन ठहराव को व्यक्त करने के लिए कुछ चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें 'विराम चिन्ह' कहते हैं।

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विराम चिन्ह

नाम	चिन्ह
पूर्मविराम / विराम	(।)
अर्द्ध विराम	(;)
अल्प विराम	,
प्रश्नवाचक चिन्ह	?
विस्मयादि बोधक	!
उद्धरण चिन्ह	(“ ”) (‘ ’)
योपक	—
निर्देशक	—
कोष्ठक	()
हंसपद (त्रुटिबोधक)	^
रेखान	—
लाघव चिन्ह	0
लोप चिन्ह	

पूर्ण विराम – (वाक्य के अन्त में) दोहा, श्लोक, चौपाई आदि में पहली पंक्ति के अन्त में एक पूर्ण विराम (।) व दूसरी पंक्ति के अन्त में (॥) पूर्ण विराम

अर्द्ध विराम – दो उपवाक्यों को जोड़ने व दो से अधिक पाधियों के बीच होता है।

एम. ए. ; बी. एड.

अल्प विराम – जहां पर कम देर रुकना हो।

विस्मयादि बोधक – विस्मय, हर्ष, आश्चर्य, घृणा का बोध करने के लिए।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- श्री कामता प्रसाद के अनुसार विराम चिन्हों की संख्या – 20
- कौन सा विराम चिन्ह अंग्रेजी से आगत नहीं – पूर्ण विराम
- किस विराम चिन्ह के प्रयोग से विचारों के तार पूर्ण रूप से टूट जाते हैं – पूर्ण विराम
- किसी के द्वारा कही बात को सुस्पष्ट करने के लिए – कोष्ठक
- किसी के द्वारा कही बात को ज्यों का त्यों लिखने के लिए – दोहरा उद्धरण चिन्ह
- किसी बात को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए – 0 (डा0, इ0)
- पुस्तक, लेखक के नाम को व्यक्त करने के लिए – इकहरे उद्धरण चिन्ह
- किसी विस्तृत बात को ना कहके संकतो में कह दिया जाय वहां पर लोप चिन्ह का प्रयोग होता है।

जैसे (_ _ _ _ _), (x x x x x x x x)

EXAM गुरु

TIPS AND TRICKS

वाक्य रचना

भाषा की पूर्ण सार्थक इकाई वाक्य कहलाती है।

या

शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है।

वाक्य

भाव/ अर्थ के आधार पर 8 प्रकार

- विविध सूचक वाक्य
- निषेधात्मक वाक्य
- आज्ञार्थक वाचक वाक्य
- प्रश्नवाचक वाक्य
- इच्छा सूचक वाक्य
- विस्मायदि सूचक वाक्य
- संकेत सूचक वाक्य
- संदेहार्थक वाक्य

रचना के आधार पर 3 प्रकार

- सरल
- संयुक्त
- मिश्र

भाव के आधार पर

विधि सूचक वाक्य – जहां कार्य होना होता है –

- जैसे – i. राम पुस्तक पढ़ रहा है।
ii. वह घर जा रहा है।

निषेधात्मक सूचक वाक्य –

- जैसे – i. राम पुस्तक नहीं पढ़ रहा है।

प्रश्नवाचक वाक्य – क्या (?)

आज्ञार्थक वाचक वाक्य –

- (i) आज्ञा कार्य
(ii) सलाह कार्य – बारिश के दिनों में बाहर नहीं निकलना चाहिए।
(iii) निवेदन कार्य – कृपया शांत रहे।

इच्छासूचक वाक्य – यह वह वाक्य होता है जिसमें अभिशाप, शुभकामना, मंगलकामना, आशीर्वाद आदि को प्रकट किया जाता है।

- जैसे – i. आपका मंगल हो
ii. भगवान आपका भला करे।
iii. सदैव सुखी रहे।

विस्मयादि सूचक वाक्य – वे वाक्य जो हृदय में उठने वाले तीव्र विकारों को व्यक्त करें

- जैसे – i. अरे तुम फेल हो गये।

कभी-2 विस्मयादि सूचक ना लगने पर भी वाक्य विस्मयादि सूचक बन जाता है

- जैसे – ii. आज कितनी बारिश हो रही है
ii. आज कितना उमस है।

संकेत सूचक वाक्य – इसमें किसी कार्य के होने या ना होने का संकेत दिया रहता है।

- जैसे – i. यदि आज बारिश होती रही तो सड़के डूब जायेगी।
ii. यदि कल बारिश हुई तो कोचिंग बन्द रहेगी।

संदेहार्थक वाक्य –

- जैसे – i. शायद कल कोचिंग बन्द रहेगी।
ii. संभव है कल वर्षा होगी।

रचना के आधार पर

सरल वाक्य – सरल वाक्य में एक ही मुख्य कर्ता एक ही क्रिया होती है। एक ही उद्देश्य एक ही विधेय होता है।

- जैसे – i. मेरा भाई राम प्रतिदिन विद्यालय जाकर शाम के समय अपने सहपाठियों के साथ फुटबाल खेलता है। (जब एक ही क्रिया है तो कर्ता भी एक ही होगा।)
ii. इस बच्चे को मेरी नीली कमीज दे दो।

संयुक्त वाक्य – संयुक्त वाक्य दो सरल वाक्यों से मिल कर बनता है पहले वाले सरल वाक्य जिसके पूर्व कोई संयोजक का प्रयोग नहीं होता उसे प्रधान वाक्य कहते हैं। जबकि दूसरा वाक्य जो संयोजक से प्रारम्भ होता है उसे समान पदीय उपवाक्य कहते हैं।

(संयोजक शब्द = और, किन्तु, लेकिन, परन्तु, अथवा, या, या तो, ना, ना तो, इसलिए आदि ।)

- जैसे – i. उसने परीक्षा नहीं दी क्यों कि वह बिमार था ।
ii. वह जिस स्थान पर रहता है वहाँ मैं भी रहता हूँ ।
iii. ज्यो ही मैं स्टेशन पहुँचा गाड़ी छूट चुकी थी ।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- कौन सा चिन्ह अल्पविराम को प्रदर्शित करता है – ,
- उसने एम ए बी एड पास किया, उपर्युक्त में विराम चिन्ह लगाओ – एम. ए. ; बी. एड.
- विराम का अर्थ क्या है – रुकना
- श्री कामता प्रसाद के अनुसार विराम चिन्हों को किस भाषा से लिया गया है – अंग्रेजी
- श्री कामता प्रसाद के अनुसार विराम चिन्हों की संख्या है – 20
- तुम कब आओगे इस वाक्य में उचित विराम चिन्ह होगा – प्रश्नवाचक
- किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए किस विराम चिन्ह का प्रयोग किया जाता है – कोष्ठक
- पुनरुक्ति व लाघव चिन्ह क्रमशः है – पुनरुक्ति (“ ”) व लाघव (0)
- पूर्ण विराम (।) का प्रयोग किया जाता है – वाक्य के अन्त में
- हंस पद (^) किस विराम का एक प्रकार है – त्रुटि विराम
- ईश्वर तुम्हें सफलता दे ।, कैसा वाक्य है – ईच्छा वाचक वाक्य
- संतोष से बढ़कर सुख नहीं ।, कैसा वाक्य है – सरल वाक्य
- मजदूर मेहनत करता है किन्तु उसके लाभ से वंचित रहता है ।, वाक्य है – संयुक्त वाक्य
- राजनीति अब एक व्यवसाय बनती जा रही है जो गुण्डागिरी के बल पर चलती है ।, मिश्र वाक्य
- जब तक वह घर पहुँचा तब तक उसके पिता जा चुके थे – मिश्र वाक्य
- मोहन नहीं आने वाला है – नकारात्मक वाक्य
- ज्यो ही मैंने दरवाजा खोला कि वह आ गया – मिश्र वाक्य
- हो सकता है कि राम का काम बन जाय – संदेह वाचक
- राम क्रिकेट खेलता है पर अच्छा नहीं – संयुक्त वाक्य
- राम ने कहा कि मैं घर जाऊँगा ।, वाक्य है – संज्ञा उपवाक्य

उपसर्ग – प्रत्यय

उपसर्ग – ऐसे अव्यय जो किसी भी शब्द के पूर्व में जुड़कर उसे विशिष्ट बना देते हैं या नया रूप देते हैं।

प्र + हार = प्रहार

वि + हार = विहार

उप + हार = उपहार

निर + आ + हार = निराहार

शब्द निर्माण चार प्रकार से होता है – समास, सन्धि, प्रत्यय, उपसर्ग

कुछ महत्वपूर्ण उपसर्ग – प्र, परा, अप, सप, अन, अनु, निस्, निर, नि, अधि, प्रति, सु, कु, उप, अति, ला, बे, बा, दर, भर, बद आदि।

प्र – प्रहार, प्रबल, प्रस्थान

परा – परामर्श, पराधिन

अप – अपमान, अपयश, अपकार

सम् – संवाद, संसार

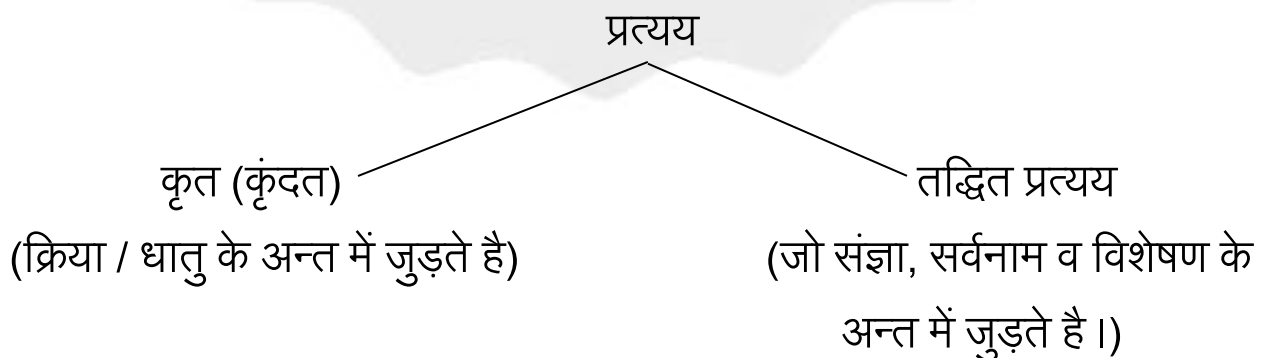
अनु – अनुपमा, अनुशासन

नि – निस्काम, निसंदेह

निर – निर्धन, निर्बल, निर्जन

नि – निलय, निरोग, निवास

प्रत्यय – वे अव्यय शब्द या ऐसे शब्द जो किसी भी शब्द के अन्त में जुड़कर उनको नवीन रूप व अर्थ दे देते हैं प्रत्यय कहलाते हैं।



कृत् प्रत्यय –

अक्कड़ – घुमक्कड़, पियक्कड़, भुलक्कड़

आ – घेरा, छापा, ठोला, झूला

आई – छवाई, धुलाई, पढ़ाई, सिलाई

आवट – थकावट, रूकावट, लिखावट

आन – चढ़ान, ढलान, घासान

तद्धित प्रत्यय –

इक – समाजिक, परिवारिक, सांसारिक

ईय – भारतीय, नारकीय

ऐरा – लुटेरा, फुफेरा, ममेरा

ईला – चमकीला, रंगीला, जहरीला

आहट – गरमाहट, चिकनाहट

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- उपसर्ग का प्रयोग कहा होता है – शब्द के आरम्भ में
- जो धातु या शब्द अंत में जोड़ा जाता है उसे कहते हैं – प्रत्यय
- विज्ञान शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है – वि
- दिखावा, चढ़ावा, भुलावा शब्द में कौन सा प्रत्यय है – आवा
- अनुवाद में प्रयुक्त उपसर्ग है – अनु
- संस्कार शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है – सम्
- 'पुरोहित' में उपसर्ग प्रयुक्त है – पुरः
- 'अति' उपसर्ग का अर्थ है – अधिक या बाहुल्य
- अध्यक्ष व अधिष्ठाता में प्रयुक्त उपसर्ग है – अधि
- 'दुस्साहस' शब्द में कौन सा उपसर्ग है – दुस्
- धातु में प्रत्यय जोड़ने से बने शब्द कहलाते हैं – कृदन्त प्रत्यय
- 'मिठास' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है – आस
- 'अवैतानिक' उपसर्ग के प्रयोग से बना शब्द है – इक
- 'अध्यापिका' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है – इका
- 'राष्ट्रीय' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है – ईय
- आहार शब्द में क्या प्रयुक्त है – उपसर्ग व प्रत्यय दोनों

सन्धि

- दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं।
- दो वर्णों के पश्चात होने वाले मेल को / परिवर्तन को संधि कहते हैं।

अ + इ
ए — सन्धि

ए — विच्छेद
अ ए

परीक्षा + अर्थी
परीक्षार्थी

विद्या + आलय
विद्यालय

सन्धि के प्रकार

स्वर संधि

व्यंजन संधि

विसर्ग संधि

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

व्यंजन संधि

व्यंजन संधि के प्रकार

व्यंजन + व्यंजन

व्यंजन + स्वर

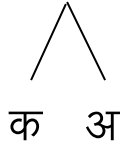
स्वर + व्यंजन

- दोनो मे से कोई भी एक व्यंजन हुआ तो व्यंजन संधि।

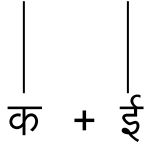
क – क् + अ

क् – हमेशा व्यंजन

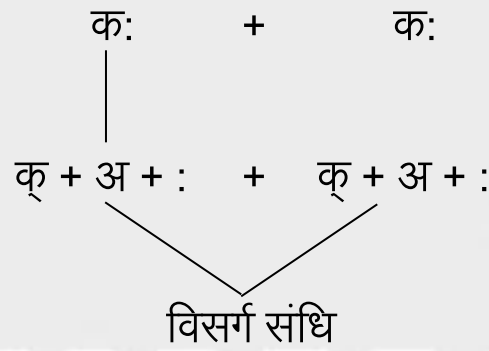
➤ क + क व्यंजन + व्यंजन



➤ वाक् + ईश व्यंजन + स्वर



विसर्ग संधि –



(:) + व्यंजन/ स्वर

स्वर संधि –

दीर्घ संधि –

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---



दीर्घ संधि

अ + आ
अ + अ
आ + अ
आ + आ

→ आ

सत्य + अर्थी = सत्यार्थी

अ + अ

विद्या + आलय = विद्यालय

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

इ + ई
इ + इ
ई + इ
ई + ई

ई

रवि + इन्द्र = रविन्द्र
नदी + इन्द्र = नदीन्द्र
रवि + ईश = रविश
कवि + ईश = कवीश

उ + उ
उ + ऊ
ऊ + ऊ
ऊ + उ

ऊ

ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय
भानु + उदय = भानोदय
वधु + उत्सव = वधुत्सव

मतृ + ऋण = मातृण
पितृ + ऋण = पितृण

अयादि संधि –

ए
ऐ
ओ
औ

+ कोई भी स्वर = अयादि संधि

ए + स्वर = अय्
ऐ + स्वर = आय्
ओ + स्वर = अव्
औ + स्वर = आव्

जैसे

नायक = नै + अक
गै + अक = गायक
पो + अन = पवन
पौ + अन = पावन
नौ + इक = नाविक

औ + अन = भवन

गौ + इका = गायिका

गुण संधि –

अ, आ + इ, ई, उ, ऊ, ऋ

देव + इन्द्र – देवेन्द्र

देव + ईश – देवेश

राज + इन्द्र – राजेन्द्र

महा + ईश – महेश

राका + ईश – राकेश

वन + उत्सव – वनोत्सव

महा + उत्सव – महोत्सव

ज्ञान + उदय – ज्ञानोदय

सूर्य + उदय – सूर्यादय

महा + ऋषि – महर्षि

राज + ऋषि – राजर्षि

देव + ऋषि – देवर्षि

सप्त + ऋषि – सप्तर्षि

वृद्धि संधि –

अ, आ + ए, ऐ, ओ, औ

+

ऐ

औ

सदा + एव – सदैव

महा + ओज – महौज

वन + औषधि – वनौषधि

यण संधि –

इ, ई, उ, ऊ, ऋ + कोई भी भिन्न स्वर

+

र्

व्

म्

इति + आद – इत्यादि

प्रति + एक – प्रत्येक

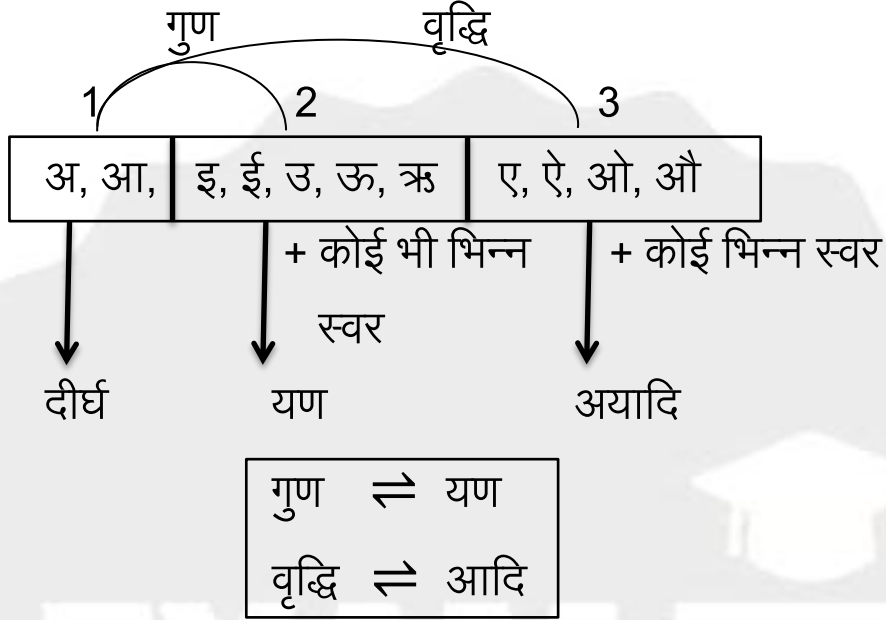
सु + आगत – स्वागत

मधु + आलय – मध्वालय

प्रति + उषा – प्रत्युषा

वि + आयाम - व्यायाम

Trick –



बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को कहते हैं – संधि
- संधि कितने प्रकार के होते हैं – 3
- पवित्र में प्रयुक्त संधि कौन सी है – अयादि संधि
- आशीर्वाद का संधि विच्छेद है – आशीः+वाद
- निराशा का संधि विच्छेद है – निः+ आशा
- परोपकार में प्रयुक्त संधि का नाम है – गुण संधि
- स्वागत में प्रयुक्त संधि का नाम है – यण संधि
- प्रत्युपकार का संधि विच्छेद क्या है – प्रति + उपकार
- मनोयोग का संधि विच्छेद है – मनः+योग
- स्वागतम् में प्रयुक्त संधि का नाम है – यण संधि
- तजोमय का सही संधि विच्छेद है – तेः+मय

- विश्वामित्र का सही संधि विच्छेद है – विश्व + अमित्र
- श्रावण का सही संधि विच्छेद है – श्रौ + अन
- सज्जन का संधि विच्छेद है – सत् + जन
- सत्याग्रह में प्रयुक्त संधि है – दीर्घ संधि
- सन्मार्ग में प्रयुक्त संधि है – व्यंजन संधि
- स्वर संधि कितने प्रकार के होते हैं – 5
- नापाक में प्रयुक्त संधि का नाम है – अयादि संधि
- चन्द्रोदय में प्रयुक्त संधि का नाम है – गुण संधि
- राकेश का संधि विच्छेद है – राका + ईश
- 'अ + ए = ए' स्वर संधि के किस भेद को बताता है – गुण संधि
- महोदय में कौन सी संधि है – गुण संधि
- उत् + आहार से कौन सा शब्द बनेगा – उदार
- निराधार में प्रयुक्त संधि का उदाहरण है – स्वर संधि
- यथार्थ में कौन सी संधि प्रयुक्त है – दीर्घ

TIPS AND TRICKS

समास (COMPOUND)

जब दो पद इस प्रकार पास-2 आते हैं कि उनके बीच की विभक्तिया लुप्त हो जाती हैं और दोनों पद मिलकर एक पद बन जाते हैं तो इस एकपद बन जाने की प्रक्रिया ही समास कहलाती है।

(समास) $\rightleftharpoons$ विग्रह

↓ ↓
संक्षेप करना विस्तार करना

राजा का आज्ञा = राजाज्ञा

विग्रह – किसी भी समासिक पद या समस्त पदों को इस प्रकार अलग-2 रखना और उनमें निश्चित विभक्तियों चिन्हों को प्रयोग करना कि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।

राजमहल – राजा का महल

समास के प्रकार –

1. पूर्वपद की प्रधानता (अव्ययी भाव समास)
2. उत्तर पद की प्रधानता (तत्पुरुष समास)
3. दोनों पद की प्रधानता (द्वन्द्व समास)
4. दोनों में से किसी की विशेषता नहीं (बहुब्रीहि समास)
5. कर्मधारय समास
6. द्विगु समास

द्विगु समास – जिस समास का पूर्वपद संख्यावाची होता है और विग्रह करते समय समूह का बोध होता है। (संख्या + समूह)

जैसे – नवग्रह, अष्टाध्यायी, सप्तर्षि, षड्ऋतु, पंचवटी, चौराहा, त्रिभुवन, दोपहर आदि।

नोट – दशानन, षडानन, पंचानन, चतुरानन, त्रिलोचन, एकानन, एकदत्त, पंजाब आदि बाहुब्रीहि समास हैं।

द्वन्द्व समास – जिस समास में समासिक पद बराबरी का हो द्वन्द्व समास कहलाता है।
दोनों पद प्रधान हो।

दोनों समान हो।

द्वन्द्व – बराबरी की टक्कर

दोनो संज्ञा हो ।

दोनो पूरक हो ।

रात – दिन धर्मोर्धर्म

माता – पिता सत्या सत्य

भाई – बहन सुरासुर

दाल – रोटी देवासुर

कर्मधारय समास – जिस समास के समासिक पद में विशेषण व विशेष्य का भाव पाया जाता है कर्मधारय समास कहलाता है ।

1. प्रथम पद (विशेषण – जो संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बताये) + द्वितीय पद (विशेष्य – जिसकी विशेषता बताइ जाय)

2. प्रथम पद (विशेष्य) + द्वितीय पद (विशेषण)

3. प्रथम पद (विशेषण) + द्वितीय पद (विशेषण)

जैसे – नील गगन श्वेत पत्र काली मीर्च
 काला सागर नील कमल लाल सागर
 नीलोत्पल

जहां कहीं भी महा शब्द लगा हो वह कर्मधारय समास हो जायेगा ।

जैसे – महात्मा, महापुरुष, महाजन, महादेव, महादेवी, महाभारत, महाकाव्य, महावीर, महाराजा, महारानी ।

सुपुत्र, कुपुत्र, कुसंगति, परमेश्वर, परमात्मा, सदाचार, सज्जन, सद्भावना – कर्मधारय समास

बहुब्रिही समास – जिस समास के समासिक पद में ना तो पूर्वपद की प्रधानता हो ना तो उत्तर पद की अपितु दोनो मिलकर किसी तीसरे पद की विशेषता या किसी तीसरे की ओर संकेत करे ।

आनन व मुध जहां भी लगे बाहुब्रिही समास

जैसे – गजानन, चक्रपाणि, वशीधर, चतुरानन, वीणापणि, मुरलीधर, पंचानन, वज्रपाणि, गिरीधर, षडानन, गंगाधर, सहस्रानन, धराधर, जलाधर, दिग्मबर, श्वेताम्बर, पीताम्बर, चर्माम्बर

कारक

कर्ता	-	ने
कर्म	-	को
करण	-	से, के द्वारा
सम्प्रदान	-	के लिए
अपादान	-	से (अलग होने के अर्थ में)
सम्बन्ध	-	का, की, के
अधिकरण	-	में, पर
सम्बोधन	-	हे, हो, रे

अव्ययीभाव समास – जिस समास के समासिक पद में पूर्ण पद कोई अव्यय होता है न विग्रह करने पर उसी के अर्थ की प्रधानता होती है अव्ययीभाव समास कहलाता है ।

प्रति – प्रत्येक, प्रतिदिन, प्रतिहार

यथा – यथा संभव

आ – आजन्म, आजीवन, आमरण

भर – भरपेट, भरपूर

वे – बेकाम, बेवजह, बेपरवाह

अव्यय – वे शब्द जो लिंग, वचक, कारक के आधार पर परिवर्ती नहीं होते हैं ।

हिन्दी में 4 प्राकर के अव्यय

क्रिया विशेषण

सम्बन्ध सूचक

विस्मय बोधक

संयोजन

तत्पुरुष समास – जिस समास के समासिक पद में उत्तर पद की प्रधानता होती है व विग्रह करने पर कर्म से लेकर अधिकरण कारक तक के कारक चिन्हों का प्रयोग होता है तत्पुरुष समास कहलाता है ।

कारक (Case) –

अंग्रेजी में 3 कारक

कर्ता

कर्म

सम्बन्ध

संस्कृत में 6 कारक

कर्ता

कर्म

करण

सम्प्रदान

आपादान

अधिकरण

हिन्दी में 8 कारक –

कारक	कारक चिन्ह
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, के द्वारा
सम्प्रदान	के लिए, को
आपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
सम्बन्ध	का, की, के
अधिकरण	में, पर
सम्बन्ध	हे, ही, रे

कर्म तत्पुरुष समास –

गगनचुम्बी, पाकेटमार, मृत्युंजय

करण तत्पुरुष समास –

पददलित – पद से दलित

तुलसीकृत – तुलसी के द्वारा कृत

रोगग्रस्त – रोग से ग्रस्त

सम्प्रदान तत्पुरुष समास –

विद्यालय – विद्या के लिए आलय
पुस्तकालय – पुस्तक के लिए आलय
रसोई घर – रसोई के लिए घर

अपादान तत्पुरुष समास –

ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
बन्धन मुक्त – बन्धन से मुक्त
देश निकाला – देश से निकाला
पदच्युत – पद से मुक्त
गंगाजल
राजपुत्र
राजकुमार
राजाज्ञा
राजाध्यक्ष

अधिकरण तत्पुरुष समास –

आपबिति – खुद पर बीती
नरोत्तम – नरो में उत्तम
पुरुषोत्तम – पुरुषो में उत्तम

भगवद्भजन – तत्पुरुष
अत्यल्प – अव्ययीभाव
छात्रावास – तत्पुरुष
परमेश्वर – कर्मधारय
देशप्रेम – तत्पुरुष
जितेन्द्रिय – बहुब्रिही
पथभ्रष्ट – तत्पुरुष
रोगपीडित – तत्पुरुष
भ्रष्टाचार – कर्मधारय
सदाचार – कर्मधारय

अनुरूप – अव्ययीभाव
अनुकूल – अव्ययीभाव
अनुसार – अव्ययीभाव
धक्का-मुक्की – बहुब्रिही
हाथा-पाई – बहुब्रिही
पदपंकज – बहुब्रिही
न्यायालय – तत्पुरुष
चर्माबर – बहुब्रिही
सुलोसन – कर्मधारय
राजमहल – तत्पुरुष

रामानुज – तत्पुरुष
तन-मन-धन – द्वन्द्व
बाधाम्बर – बहुब्रिही
सतधर्म – कर्मधारय
निर्जन – अव्ययीभाव

राजाज्ञा – तत्पुरुष
दिगम्बर – बाहुब्रिही
पीताम्बर – बाहुब्रिही
निर्विवाद – अव्ययीभाव

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नये सार्थक शब्द को क्या कहते हैं – समास
- समास का शाब्दिक अर्थ होता है – संक्षेप
- देवासुर में कौन सा समास है – द्वन्द्व समास
- चौराहा में कौन सा समास है – द्विगु समास
- निशाचर में कौन सा समास है – बहुब्रिही समास
- नवग्रह में कौन सा समास है – द्विगु समास
- नीलकमल में कौन सा समास है – कर्मधारय समास
- पीताम्बर में कौन सा समास है – बहुब्रिही समास
- नरोत्तम में कौन सा समास है – तत्पुरुष समास
- विद्यार्थी में कौन सा समास है – तत्पुरुष समास
- कन्यादान में कौन सा समास है – तत्पुरुष समास
- चतुर्भुज में कौन सा समास है – बहुब्रिही समास
- पाप-पुण्य में कौन सा समास है – द्वन्द्व समास
- मृगनयनी में कौन सा समास है – कर्मधारय
- चक्रपाणि में कौन सा समास है – बहुब्रिही
- गगन चुम्बी में कौन सा समास है – तत्पुरुष समास
- त्रिफला में कौन सा समास है – द्विगु समास
- तन-मन-धन में कौन सा समास है – द्वन्द्व समास
- परमानन्द में कौन सा समास है – कर्मधारय समास
- महाजन में कौन सा समास है – कर्मधारय समास

रस

“भरत मुनि ने रस शब्द का अर्थ स्वाद से लिया है”

इनके अनुसार जिसका अस्वादन किया जा सके वह ही रस है।

✓ भरतमुनि ने अपनी परिभाषा में रस को वस्तुगत रूप प्रदान कर दिया है।

अस्वादते इति रसः – भरत मुनि

✓ तैन्तरीयोपनिषद में रसको ‘ब्रह्म स्वरूप’ माना गया है।

✓ आचार्य विश्वनाथ का कथन है “वाम्यम् रसात्मक काव्यम्”।

→ रचना – साहित्य दर्पण

→ वाक्य ही रस की आत्मा है।

→ रस को ब्रह्म सहोदर कहा है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पाठक जिसे पढ़कर स्रोता जिसे सुनकर, दर्शक जिसे देखकर जो आनन्द की अनुभूति करते हैं वही रस है।

✓ भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में रस के सन्दर्भ में यह सूत्र दिया –

विभावानुभाव व्यभिचारिभाव, संयोग द्रव निष्पत्ति

विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

✓ भरत मुनि ने अपने रस सूत्र में स्थायी भाव का उल्लेख नहीं किया है।

रस के अंग –

स्थायी भाव (8)

विभाव

अनुभाव (8)

संचारी भाव/ व्यभिचारी भाव (33)

स्थायी भाव – वे भाव होते हैं जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय में सदैव स्थायी रूप से विद्यमान होते हैं और अनुकूल परिस्थितियों में पाते ही जागृत हो जाते हैं।

भरत मुनि अनुसार इनकी संख्या 8 मानी है।

रति, शोक, उत्साह, ह्रास, क्रोध, भय, आश्चर्य, जुगुप्सा

विभाव – विभाव वे विशिष्ट भाव होते हैं जो सुसुप्त स्थायी भाव को जागृत करने का काम करते हैं विभाव कहलाते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं –

1. आलम्बन

2. उद्धीपन

आलम्बन – वे विभाव जिस पर स्थायी भाव टिके रहते हैं या अवल्म्बित होते हैं।

आश्रय – जिसके हृदय में स्थायी भाव जागे

विषय – जिसके प्रति जागे

उद्धीपन – वह विभाव जो जागृत हुये स्थायी भाव को और अधिक तेज कर देता है।

यहा परिस्थितया, मनोदशाए, वातावरण में सब उद्धीपक होते हैं।

अनुभाव – वे विभाव होते हैं जो आश्रय में स्थायी भाव जागृत होने के पश्चात उसके क्रिया कलापो में भाग लेते हैं।

भरत मुनि ने इनकी संख्या 4 मानी है –

1. सात्विक

2. कायिक

3. वाचिक

4. आहार

सात्विक – वे अनुभाव जो आश्रय में खुद से/ स्वं से प्रकट होते हैं इसकी संख्या 8 होती है।

स्तंभ, प्रलय, रोमांच, कम्प, स्वरभंग, स्वैद, अश्रु, वैकर्थ

कायिक – वे चेष्टाए जो आश्रय जानबूझकर करता है।

संचारी भाव – ये भाव पानी में उठने वाले बुलबुलो की भाँती होती है जो एक ही छड़ में उठते व दूसरे छण में विलिन होते रहते हैं इनका कार्य जागृत स्थायी भाव को और अधिक संचारित करना है।

भरतमुनि ने इनकी संख्या 33 मानी है।

रस के प्रकार – भरत मुनि के अनुसार रस 8 प्रकार के होते हैं।

रस	स्थायी भाव
शृंगार रस	रति
करुण	शोक
हास्य	हास

वीर

उत्साह

रौद्र

क्रोध

भयानक

भय

उद्भुत

विस्मय आश्चर्य

वीभत्स

जगुस्पा

➤ भरत मुनि ने शांत रस के रस नहीं माना है।

शांत

निर्वेद

वात्सल्य

संतान स्नेह/ वात्सलता

भक्ति

अनुराग (ईश्वर प्रेम)

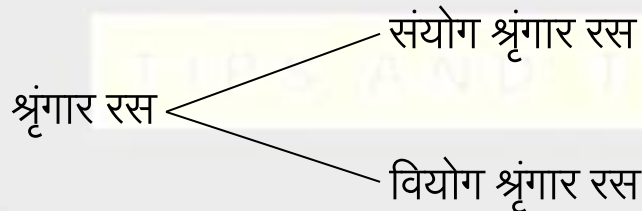
आचार्य रूप गोस्वामी ने माना

आचार्य विस्वनाथ ने माना

रचना – साहित्य दर्पण

शृंगार रस – इसे रसरज कहा जाता है।

आचार्य भोजराज ने अपनी रचना शृंगार प्रकाश में एक मात्र रस की कल्पना की शृंगार रस।



संयोग शृंगार – यह संयोग प्रत्यक्ष दर्शन, स्वप्न दर्शन, चित्र दर्शन आदि के द्वारा होता है।

- ✓ कविता के भाव, कहानी के पात्र का फिल्म के भाव नहीं अनुभूति देने लगते हैं तो इस प्रक्रिया को साधारीकरण (आचार्य भट्ट ने नाम दिया) की प्रक्रिया कहते हैं।
- ✓ रति नामक स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से संभोग होता है वहा शृंगार रस होता है।
- ✓ नायक नायिक के मिलने से संयोग शृंगार रस व उनके विरह में वियोग शृंगार रस होता है।

बतरस लालच लाल की मुरली घरी लुकाया ।

सौह करै भौहनु हंसे देने के नटि जाय ॥ (संयोग)

तिस दिन तरसत नैन हमारे, सदा रहत वर्षो ऋतु हम पर जब श्याम सिधारे । (वियोग)

करुण रस – शोक नामक स्थायी भाव, विभाव आदि के संयोग से करुण रस की उत्पत्ति होती है ।

सोक विकल सब रोवहि रानी ।

रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥

करहि विलाप अनेक प्रकारा ।

परिहि भूमि तल बारहि बार ॥

हास्य रस – जब किसी पात्र या व्यक्ति की वेशभूषा / बनावट आकृति उसके बोलचाल में विचित्रता हो तो उसे देखकर हास रस उत्पन्न होता है ।

1. दोना पात बबूल को, तामे तनिक पिसान ।

राजा जी करने लगे, छठे छमासे दान ॥

2. विन्ध्य के वासी उदासी,

तपोव्रत धारी महाबिनु नारी दुखारे,

गौतमतीय तरी तुलसी सो

कथासुनि में मुनिवृन्द सुखारे ।

वीर रस – जब किसी काव्य को पढ़कर, देखकर, सुनकर, उत्साह का संचार हो ।

1. बुंदेलो हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी ।

खूब लड़ी मददानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

2. वीर तुम बड़े चलो, धीर तुम बड़े चलो ।

सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो ।

तुम कभी रूको नहीं तुम कभी झुको नहीं ।

रौद्र रस – शत्रु अथवा अविनीत व्यक्ति की चेष्टा, गुरुजनो की निन्दा, अपमान आदि से उत्पन्न क्रोध विभावदि से संयुक्त हो रौद्र रस उत्पन्न होता है ।

1. उस काल मारे क्रोध के तन कौंपने उसका लगा ।

मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा ।

2. मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाला सा क्रोधित हुआ ।

प्रलयार्थ उसके निज बहों, बस काल हो क्रोधित हुआ ॥

वीर रस/ रौद्र रस के प्रमुख कवि –

दिनकर, भूषण, सुभद्रा कुमारी चौहान

भयानक रस – जहां पर विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के द्वारा भव नामक स्थायी भाव जब रस रूप में परिवर्तित होता है तब वहा भयानक रस होता है ।

1. उधर गरजती संधु लहरियां कुटिल काल के जालो सी ।

चली आ रही फेन उगलती फन फैलाये व्यालो – सी ॥

विभत्स रस – स्थायी भाव – घृणा

1. सिर पर बैठो काग अंखि दोउ खात – निकारत ।

खीचत जीमहि स्यार अतिहि आनन्द उर धारत ॥

अद्भुत रस – किसी असाधारण वस्तु को देखकर मन में विस्मय या आश्चर्य नामक स्थायीभाव ही विभाव आदि से संयुक्त होकर अद्भुत रस बन जात है ।

1. अखिल भुवन चर-अचर सब ।

हरि मुख में लखि मातु ॥

चकित भई गदगद वचन ।

विकासित दृग पुलकातु ॥

शांत रस – निर्वेद नामक स्थायी भाव विभाव आदि से संयुक्त होकर शान्त रस की निष्पत्ति होती है ।

1. मन रे कागढ़ का पुतला ।

लागै बूंद विनसि जाय छिन में गरब करै क्यो इतना ।

वात्सल रस – वात्सल्य नामक स्थायी भाव का विभवदि के साथ संयोग से वात्सल्य रस की निष्पत्ति होती है ।

1. जसोदा हरि पालन झुलावै ।

हलरावै दुलरावै, मल्हावै जोई सोई, कहु गावै ॥

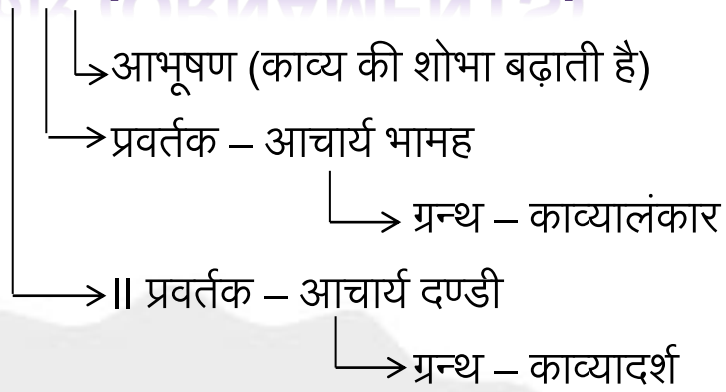
भक्ति रस – भगवद् विषयक

1. राम जपु, राम जपु, राम जपु सावरे ।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- रस कितने प्रकार के होते हैं – 9
- भरत मुनि के अनुसार रसों की संख्या – 8
- स्थायी भावों की कुल संख्या – 9
- संचारी भावों की कुल संख्या – 33
- वाक्यं रसात्मक काव्यम् किसका कथन है – विश्वनाथ
- अनुभावों की कुल संख्या होती है – 4
- शांत रस का स्थायी भाव क्या है – निर्वेद
- शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है – रति
- सर्वश्रेष्ठ रस/रसों का राजा माना जाता है – शृंगार रस
- रसोत्पत्ति में श्रय की चेष्टाएं क्या कहलाती हैं – अनुभाव
- वीभत्स रस का स्थायी भाव है घृणा / जुगुप्सा
- भरतमुनि के रजसूत्र से किसका उल्लेख नहीं है – शांत रस
- हिन्दी साहित्य का नौवा रस है – शांत रस
- रौद्र रस का स्थानीय भाव है – क्रोध
- किलक अरे मैं नेह निहारू । इन दातों पर मोती वारू ॥ कौन सा रस है – वात्सल्य
- कवि बिहारी मुख्यतः किस रस के कवि हैं – शृंगार रस
- वीर रस का स्थायी भाव है – उत्साह
- विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करे उन्हें रहते हैं – अनुभाव

अलंकार (ORNAMENTS)



- ✓ अलंकार शब्द का अर्थ – ‘शोभा कारक धर्म’
- ✓ केशव दास अलंकारवादी कवि थे।
- ✓ आचार्य भामह के अनुसार अलंकार ‘काव्य की आत्मा’

अलंकार – जो शोभा बढ़ाये

अलंकार्य – जिसकी शोभा बढ़ाये

अलंकार

शब्दा अलंकार (शब्दों पर आधारित)

अर्था अलंकार (अर्थ पर आश्रित)

शब्दा अलंकार – ये मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं –

1. अनुप्रास
2. यमक
3. श्लेष

इसके अतिरिक्त वक्रओक्ति, विपसा, पुनरोक्ति प्रकाश को भी शब्दा अलंकार के अन्तर्गत आते हैं।

1. अनुप्रास अलंकार – जहां पर समान वर्णों की आवृत्ति बार-2 हो अनुप्रास अलंकार होता है।

तरनि-तनुजा तट तमाल तरुवर बहुछांए।

अनुप्रास के भेद - i. छेकानुप्रास

ii. वृत्यानुप्रास

iii. लाय नुप्रास

iv. श्रुत्यानुप्रास

v. अन्तयानुप्रास

i. **छेकानुप्रास अलंकार** – वह अनुप्रास जहां पर एक या अनेक वर्णों की स्वरूप व क्रम से एक ही बार आवृत्ति हो (अर्थात् वह वर्ण क्रम से दो बार आये)

जैसे – बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा ।

सुकवि सुबास सरस अनुरागा ॥

कानन कठिन भयंकर भारी ।

मोहन मूरति सावर सूरती नैग बने विशाल ।

ii. **वृत्यानुप्रास** – जहा पर एक या अनेक वर्णों की अनेक बार आवृत्ति हो

जैसे - i. कलावती केलीवती कलिन्दजा

ii. किलकी किलकी कै कौतूहल करती कली ।

डिम-2 डमरु दिगम्बर बजाई है ।

iii. **लाटानुप्रास** – इसे शब्दा अनुप्रास भी कहते हैं । अर्थात् जहां एक समान शब्दों की दो बार आवृत्ति होती है अर्थात् जहां एक जैसा शब्द समूह में एक से अधिक बार आता है किन्तु अन्यय करने पर विराम चिन्ह या किसी वर्ण के आ जाने से पूरा का पूरा अर्थ बदल जाता है –

जैसे - i. रोको, मत जाने दो ।

रोको मत, जाने दो ।

ii. पूत कपूत तो का धन संचय ।

पूत सपूत तो का धन संचय ।

2. **यमक अलंकार** – जहां पर एक ही शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो किन्तु उसका अर्थ अलग-2 हो वहा यमक अलंकार होता है ।

जैसे - i. काली घटा का घमंड घटा ।

ii. कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय

या खाये बौराये जग, या पाये बौराय ।

कनक – धतूरा

कनक - सोना

iii. तीन बेर खाती थी, वह तीन बेर खाती है ।

3. श्लेष अलंकार – शब्द एक ही हो अर्थ अनेक बार हो –

जैसे - i. रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।

पानी गये ना उबरै, मोती मानुष चून ॥

चमक

प्रतिष्ठा

जल

ii. मंगन को देखि पट देती बार बार है ।

कपड़ा

दरवाजा

iii. मेरी भव बाधा हरौ, राधा नगरी सोई ।

जा तन की साई परत, श्याम हरित दुति होई ॥

हरा हास्य (खिलता चेहरा)

अर्था अलंकार –

उपमा अलंकार – जहां पर उपमेय में उपमान की तुलना दी जाय या समानता दी जाय ।

1. उपमेय – जिसकी तुलना की जाय

2. अपमान – जिससे तुलना की जाय

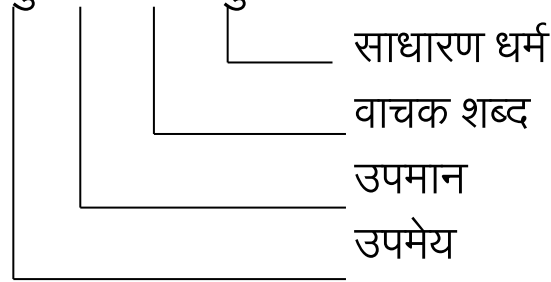
3. साधारण धर्म – गुण रंग रूप आकार

4. वाचक शब्द – सा, सी, से, सम, समान सरीज

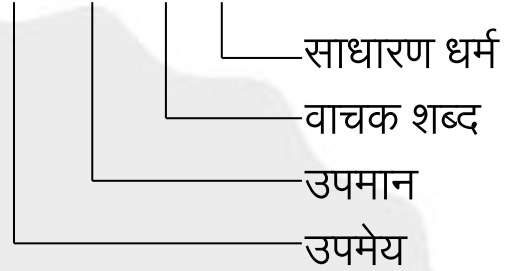
Note – चारो में से एक भी लुप्त हो तो – लुप्त उपमा ।

4 चारो मौजूद पूर्णोपमा

जैसे – i. मुख चन्द्र सा सुन्दर है।



ii. बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा।



प्रतीप अलंकार – उपमा का उल्टा

- i. मुख सा चन्द्र है।
- ii. कमल चरण के समान है।

अन्वय अलंकार – उसी की तुलना उसी से करे।

- i. राम के सम राम है।
- ii. सीया से सीया है।
- iii. कमल के समान कमल।
- iv. भारत के सम भारत है।

रूपक अलंकार – जब उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप कर दिया जाता है।

- जैसे – i. जल ही जीवन है .
- ii. मुख चन्द्र है।
 - iii. चरण कमल है।
 - iv. ऊंट रेगिस्तान का जहाज है।

उत्प्रेक्षा अलंकार – जब उपमेय में उपमान की संभावना हो या

सन्देहा अलंकार – इससे स्पष्ट नहीं होता कि अमुक वस्तु उपमेय है या उपमान।

‘जहां भी उपमेय या उपमान में संशय की स्थिति हो वहां पर संदेह अलंकार होता है।’

वाचक शब्द – या, किं, किधो आदि।

जैसे – चरण है या कमल

मुख है या चंदा
सॉप है या रस्सी

मद भरे ये नयन मलीन है अल्प जल में या विफल लघु मीन है ।

भ्रांतिमान अलंकार – जहां पर भ्रम या भांति के कारण उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है या समझ लिया जाता है ।

वाचक शब्द – देखकर, सोचकर, मानकर, जानकर, विचारकर आदि ।

जैसे – मुख को चन्द्रमा समझ बैठा ।
चरण को कमल समझ बैठा ॥

मानवीकरण अलंकार – जहां अमानिव (Non – living) की कल्पना कर ली जाए ।

‘जहां अमानव में मानवीय गुण आ जाए’

जैसे – दीवारो के भी कान होते हैं
काम बोलता है ।
नदी दौड़ती है ।
आज नदी बिल्कुल उदास थी ।

विरोधाभास – जहां वास्तविक विरोध ना होते हुये भी विरोध का आभास होता है या विरोध मालूम होता है –

जैसे – i. दाग अच्छे हैं ।
ii. शीतल ज्वाला जलती है ।
iii. ढाई आखर प्रेम का पढ़े से पंडित होई ।

अतिशयोक्ति अलंकार – किसी भी बात को बहुत बढ़ा चढ़ा कर पेश करना उस पर विश्वास ना किया जा सके ।

जैसे – कनगुरिया की मुंदरि कंगन होय
सूखा हिया हार भी भारी

नोट – उपमेय की तुलना उपमान से करे – उपमा
उपमान की तुलना उपमेय से करे – प्रतीय

जैसे - चरण कमल के समान है – उपमा
कमल चरण के समान है – प्रतीय

अन्यव्य अलंकार – स्वं की तुलना स्वं से करे –

जैसे - भारत के सम भारत है ।

विभावना अलंकार – जहां पर बिना कारण के कर्म होता है । (जहां पर कारण ना होने पर भी कार्य हो)

वाचक शब्द – बिनु, बिना, बिन, ना

जैसे - i. बिनु पग चले, सुने बिनु काना ।

कर बिनु कर्म करै बिद्या नाना ॥

ii. नचि अचानक ही उठे, बिनु पावस (वर्षा ऋतु) वन मोह ।

विशेषोक्ति – ‘कारण होने पर भी कर्म नहीं होता’

जैसे- i. जल बिच मीन पियासी

ii. नैनो से नीत वर्षा होती ।

फिर भी प्यास नहीं बुझती ॥

असंगति अलंकार – जहा कारण कही और होता है व उसका परिणाम कही और होता है ।

जैसे- i. चोट लगती है हमारे चिल्लाती है माँ

ii. हृदय घाव मेरे, पिर रघुवीरे ।

अपन्हुति अलंकार – जहां पर उपमेय को निषेध कर उपमान को स्थापित किया जाय–

जैसे i. मुख नहीं चन्द्रमा है ।

ii. चरण नहीं कमल है ।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- चरर मरर खुल गये अरर में कौन सा अलंकार है – अनुप्रास
- पीपर पात सरिस मनडोला पंक्ति में अलंकार है – उपमा
- चरण धरत चिंता करत, चितवत चारिउ ओर । सुबरन को दूढत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर ॥ में अलंकार है – श्लेष
- ज्यो -2 बूढ़े स्याम रंग, त्यो त्यो उज्ज्वल होय में अलंकार है – विरोधाभाष
- चरण – कमल बन्दौ हरिराई में अलंकार है – रूपक
- नवल सुन्दर श्याम शरीर में अलंकार है – उल्लेख
- उपमेय में उपमान का अभेद कहलाता है – रूपक
- जहां बिना कारण के कार्य का होना पाया जाता है वहा कौन सा अलंकार होगा – विभावना
- जहां उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त हो वहां अलंकार होगा – उपमा ।
- हनुमान की पूंछ में, लगन न पाई आग । लंका सिगरी जल गई, गए विश्वार भाग ॥ में अलंकार है – अतिशयोक्ति

TIPS AND TRICKS

छन्द

- ✓ छंद शब्द में छद् धातु में असन् प्रत्यय लगाने से बना है। छंद धातु का अर्थ है 'आह्लादित करना', (प्रसन्न) करना
- 'चरण, मात्रा, गति, यति, लय, एवं तुकबन्दी से युक्त रचना को ही हम छन्द कहते हैं।'
- ✓ छंद शब्द का अर्थ ढकना होता है।
- ✓ छंद शब्द ऋग्वेद में उल्लेखित है।
- ✓ छंद शास्त्र के प्रवर्तक पिंगलाचार्य या पिंगल मुनि हैं।
- ✓ छंद में मात्रा या वर्णों की गणना का एक नियम जहां पूरा होता है उसे चरण कहते हैं।
- ✓ किसी भी वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा कहलाता है।
- ✓ पाद या चरण – छन्द में प्रायः चार चरण होते हैं पहले व तीसरे चरण को विषम चरण व दूसरे व चौथे चरण को सम चरण कहते हैं।
- ✓ वर्ण व मात्रा – ह्रस्व (अ, इ, उ, ऋ)
दीर्घ (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)
- ✓ ह्रस्व वर्ग में एक मात्रा दीर्घ वर्ण की दो मात्रा गिनी जाती है।

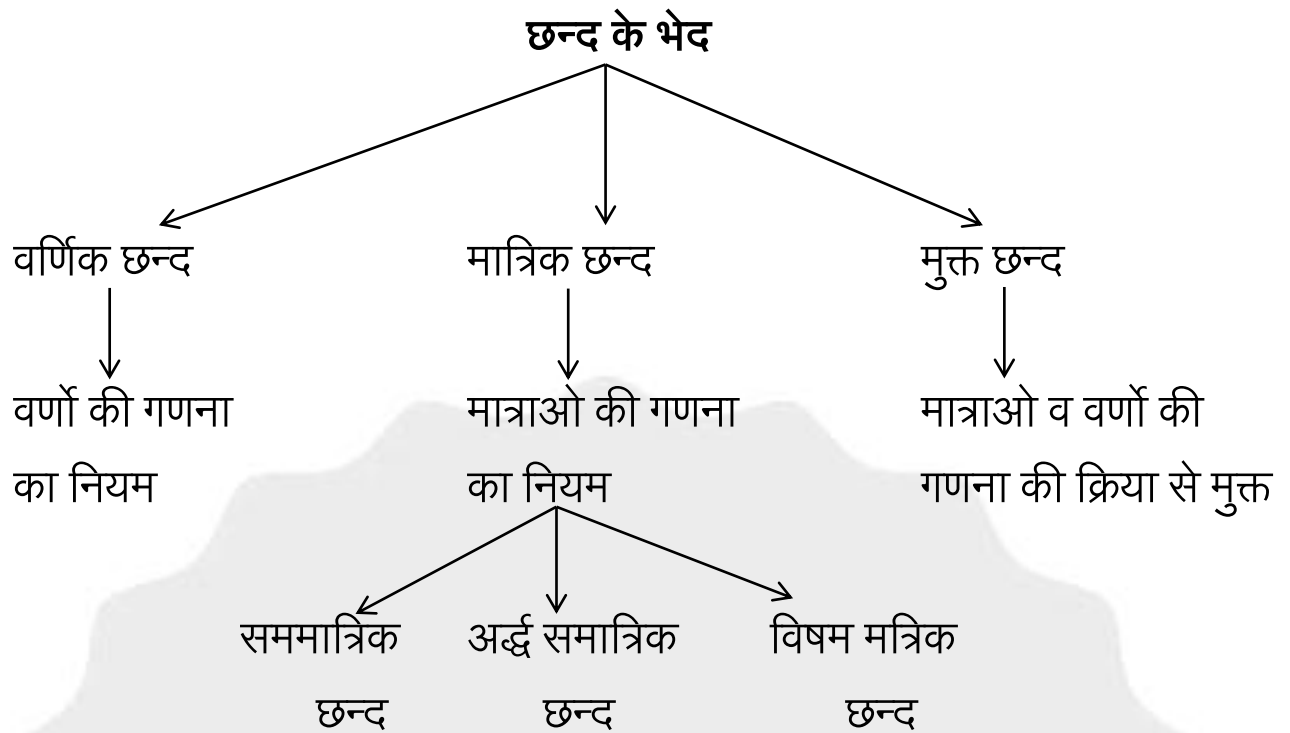
लघु मात्रा (I)

दीर्घ मात्रा (S)

वर्ण	लघु वर्ण (I)	कमल	तीन वर्ण	कमाल - 3 वर्ण
		।।।	तीन मात्रा	।।S 4 मात्रा
वर्ण	गुरु वर्ण (S)	धर्म	2-वर्ण	चन्द वाक्य
		S ।	3-मात्रा	S । S ।

यदि – छन्द पढ़ते समय जहां हम थोड़ा सा विश्राम लेते हैं वहां यदि हो जाती है।

गति – लय या प्रवाह को गति कहते हैं।



1. सममात्रिक छन्द – सभी चरणों में मात्रा समान होती है

चरण	1	16-16 मात्राएँ
	2	
	3	
	4	

जैसे – चौपाई (16), रोला (24), गितिका (26), हरिगितिका (28), आल्हा (31)

2. अर्द्ध सममात्रिक छन्द

चरण	1 - 11
	2 - 13
	3 - 11
	4 - 13

जैसे – दोहा, सोरठा, बरवै, उल्लाला

3. विषममात्रक छन्द –

सम + अर्द्धसम

अर्द्ध सम + सम

जैसे – छप्पय, कुण्डलिया

i. चौपाई – सम मात्रिक छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण में यति होती है।

जैसे – जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।

॥ ॥ ५ । ५ । ॥ ५ ॥

जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥

॥ ॥ ५ । ॥ ५ । ५ ॥

ii. रोला – यह भी सम मात्रिक छन्द प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ 11 व 13 पर यति होती है । अन्तिम में 2 गुरु या 2 लघु वर्ण होते हैं ।

जैसे – जिसकी रज में लोटा लोटकर बड़े हुये हैं ।

घुटनो के सरक – सरक कर खड़े हुये हैं ॥

iii. गितीका – 1 – 26

2 – 26 यदि 14, 12

3 – 26

4 – 26

iv. हरिगीतिका – हरिगीतिका का बादशाह – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

1 – 28

2 – 28 यति - 16 – 12

3 – 28

4 – 28

v. आल्हा –

1 – 31

2 – 31 यति - 16 – 15

3 – 31

4 – 31

अर्द्ध सममात्रिक छन्द

सभी में चार चरण होते हैं ।

दोहा – अर्द्धसममात्रिक छन्द

प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ

द्वितीय व चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएं

अन्तिम के दोनो वर्ण (ऽ ।) गुरू, लघु

जैसे – श्री गुरू चरण सरोज रज, निज मन मुकर सुधारि ।

ऽ ।। ।।। ।ऽ। ।।, ।। ।। ।।। ।ऽ।

बरनऊ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि ॥

सोरठा – सोरठा दोहा छंद का ठीक उल्टा होता है ।

विषम चरण 11-11 मात्राएं

सम चरण 13-13 मात्राएं

बरबै – विषम चरण में 12-12 मात्राएं

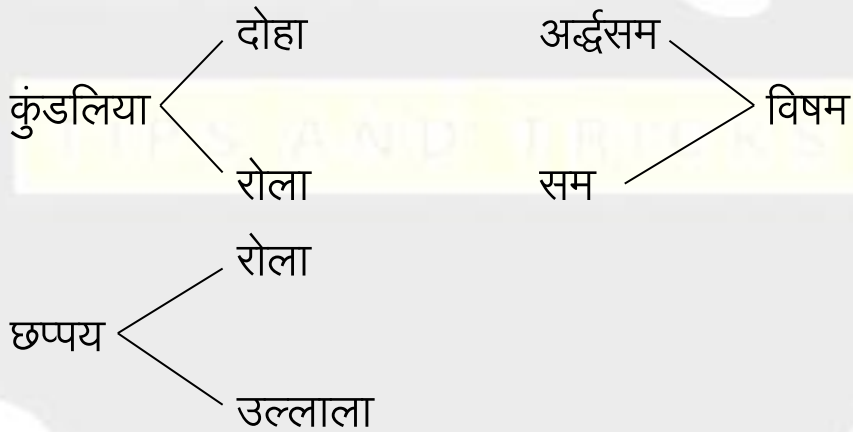
सम चरण में 7-7 मात्राएं

उल्लाला – कुल 56 मात्रा

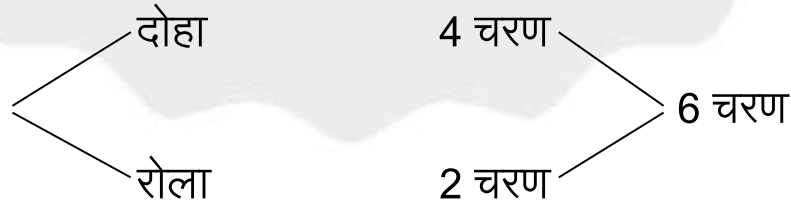
विषम चरण – 15-15 मात्रा

सम चरण – 13-13 मात्रा

विषम मात्रिक छंद –



कुण्डलिया –



कुण्डलिया में शब्द का प्रारम्भ जिस शब्द से होता है उसी से उसका समान भी होता है ।

ii. छप्पय – छप्पय छंदो का राजकुमार – चन्दरबरदाई

रोला	- 4 चरण	}	6 चरण
+			
उल्लाला	- 2 चरण		

वर्णिक छन्द

- गणो का प्रयोग वर्णिक छन्द के अन्तर्गत होता है।
- गणो की संख्या 8 होती है।

i. इन्द्र वज्रा

ii. उन्पेन्द्रवज्रा

iii. मालिनी

iv. बसन्त तालिका

v. सवैया

vi. कविल

vii. घनाक्षरी

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख कहा मिलता है – ऋग्वेद में
- कोई भी छंद किसमें विभक्त रहता - चरण व यति में
- चारो चरण में समान मात्रा वाले छंद कहलाते हैं – सम मात्रिक छंद
- शिल्पगत तौर पर दोहे का उल्टा होता - सोरठा
- जिस छन्द के पहले व तीसरे चरण में 13-13 व दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं यह छंद कहलाता है – दोहा।
- छंद कितने प्रकार के होते हैं – 3 (वर्णिक, मात्रिक, मुक्तक)
- धनाक्षरी छंद है – वार्णिक
- निराला की कविता 'जूही की कली' उदाहरण है – मुक्त छन्द का

- वीर या आल्हा किस जाति का छन्द है – मात्रिक
- दोहे व रोले को मिलाने पर कौन सा छन्द बनता है – कुण्डलिया
- चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं – 16
- किस छन्द में 6 चरण होते हैं – छप्पय
- अवधी भाषा का निजि छन्द है – बरवै
- वर्णिक छन्दों में किसका विचार होता है – वर्णीका
- अर्द्ध सममात्रिक जाति का छन्द है – दोहा
- मुक्त छन्द के जनक माने जाते हैं – पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला



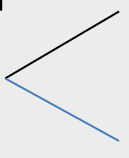
EXAM गुरु

TIPS AND TRICKS

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणि, भाव, उसकी अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं।
जैसे – राम, श्याम, प्रदीप, कुर्सी, पुस्तक, कानपुर, लखनऊ, बुराई, भलाई, क्रोध, बचपन, जवानी, बुढ़ापा आदि।

संज्ञा के प्रकार –

- | | | |
|------------------------|---|-------------------|
| 1. व्यक्ति वाचक संज्ञा |  | समूह वाचक |
| 2. जातिवाचक संज्ञा | | |
| 3. भाव वाचक संज्ञा | | द्रव/ पदार्थ वाचक |

सामान्य तौर पर संज्ञा 3 प्रकार के होते हैं लेकिन अर्थ या भाव के आधार पर 5 प्रकार के होते हैं।

1. व्यक्तिवाचक
2. जातिवाचक
3. भाववाचक
4. समूहवाचक
5. पदार्थ वाचक

1. व्यक्ति वाचक संज्ञा – जिससे किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणि का नाम प्रकट हो तो वहा व्यक्ति वाचक संज्ञा होगा।

जैसे – राम, श्याम, कानपुर, लखनऊ, हिमालय, राम चरित मानस आदि।

नोट – व्यक्ति वाचक संज्ञा का वर्गीकरण नहीं हो सकता है।

2. जाति वाचक संज्ञा – जो किसी विशेष व्यक्ति को सम्बोधित ना करके किसी विशेष वर्ग को सम्बोधित करे।

जैसे – मनुष्य, पशु, नदी, गाँव, पर्वत, आय, गाय, नगर, आदि।

3. समूह वाचक संज्ञा – यह एक समूह विशेष को व्यक्ति करता है।

जैसे – कक्षा, बाजार, भीड़, सेना, गुच्छा, टीम, पुलिस, मेला आदि।

4. पदार्थ वाचक संज्ञा – वह संज्ञा ज किसी दूसरी वस्तु से निर्मित होती है।

जैसे – दूध, सोना, घी, तेल, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि।

5. भाव वाचक संज्ञा – भाव वाचक संज्ञा वो संज्ञा है जिससे किसी भाव, गुण, दोष, अवस्था आदि प्रकट होती है।

जिसे ना देका, ना सुना केवल महसूस किया जा सके।

जैसे – बुढ़ापा, मिठास, सौन्दर्य, माधुर्य, थकावट आदि।

उदाहरण -

हमारे देश में जयचंदो की कमी नहीं है – जाति वाचक संज्ञा

भारत में अनेक प्रकार की मिठाई जाई जाती है – जाति वाचक संज्ञा

नेता जी ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा – व्यक्ति वाचक

गांधी जी ने कहा था करो या मरो – व्यक्ति वाचक

आजकल मोदी का जलवा है – व्यक्ति वाचक

✓ भाव वाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा से सर्वनाम से क्रिया से विशेषण आदि से बनती है।

प्रत्यय – त्वा, पन, पा, आवट, गीरी, आई, ता, आव, आदि

जैसे – मनुष्यता, पशुता, बुढ़ापा, सौन्दर्य, थकावट आदि।

क्रिया से भाव वाचक संज्ञा		विशेषण से भाव वाचक संज्ञा	
पढ़ना	पढ़ाई	मोटा	मोटापा
लिखना	लिखाई	बुढ़ा	बुढ़ापा
पहनना	पहनावा	मधुर	माधुर्य
खेलना	खेल	निपुण	निपुणता
सर्वनाम से भाव वाचक संज्ञा		जाति वाचक संज्ञा से भाव वाचक	
अपना	अपनापन	आदमी	आदमियत
पराया	परायापन	पशु	पशुता
मम	ममत्व	बालक	बालकपन

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- वस्तु, स्थान, भाव या विचार के द्योतक शब्द को कहते हैं – संज्ञा
- व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं – 3
- स्त्रीत्व शब्द में कौन सी संज्ञा है – भाववाचक
- वीर का भाव वाचक संज्ञा का रूप है – वीरता व वीरत्व
- क्रोध, लालिमा, मिठास में कौन सी संज्ञा निहित है – भाव वाचक संज्ञा
- बुढ़ापा एक प्रकार का अभिशाप है। इसमें बुढ़ापा शब्द की संज्ञा है – भाव वाचक
- सच्चरित्रता किस मूल शब्द से बना है – चरित्र
- देश की हानि जयचंदो से होती है इस वाक्य में संज्ञा है – जातिवाचक
- धुआँ शब्द में कौन सी संज्ञा है – द्रववाचक संज्ञा
- गोस्वामी जी ने रामचरित मानस की रचना की इस वाक्य में संज्ञा निहित है – व्यक्ति वाचक संज्ञा

EXAM गुरु

TIPS AND TRICKS

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयोग किये जाते हैं
या

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के प्रकार – 6 प्रकार के होते हैं –

1. पुरुष वाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. निजवाचक सर्वनाम
5. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम जो पुरुष व स्त्रियों के नाम के बदले प्रयुक्त होते हैं।

ये तीन प्रकार के होते हैं –

प्रथम पुरुष/ उत्तम पुरुष

ये सदैव वक्ता के नाम के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

मैं – एक वचन

हम – बहुवचन

मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष वे सर्वनाम होते हैं जो स्रोता के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

जैसे – तुम, आप

अन्य पुरुष

वक्ता स्रोता जिसके सम्बंध में बात करते हैं।

वह – एक वचन

वे – बहुवचन

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम जो संज्ञा की निश्चितता को प्रकट करते हैं।

यह, वह – यह पुस्तक है।

ये, वे – ये पुस्तकें हैं।

वह छात्र है – एक वचन

वे छात्र हैं – बहुवचन

3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम जो संज्ञा की निश्चितता को प्रकट नहीं कर पाते हैं।

कोई – घर में कोई है।

कुछ – दुध में कुछ मिला है।

4. निजवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम या ऐसे सर्वनाम जो स्वं को व्यक्त करते हैं।

जैसे – मैं अपना काम स्वं करता हूँ।

मैं अपना काम आप से ही कर लेता हूँ।

मैं आप बीती सुना रहा हूँ।

आप भला तो जग भला।

5. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम या ऐसे सर्वनाम जो दो संज्ञा के सम्बन्ध को प्रकट करते हैं

जैसे – जो आया है, सो जाएगा।

जो जागत है, वो पावत है।

जो पढ़ता है, वो सफल है।

6. प्रश्न वाचक सर्वनाम –

कौन – सजीव

क्या – निर्जिव

घर में कौन है।

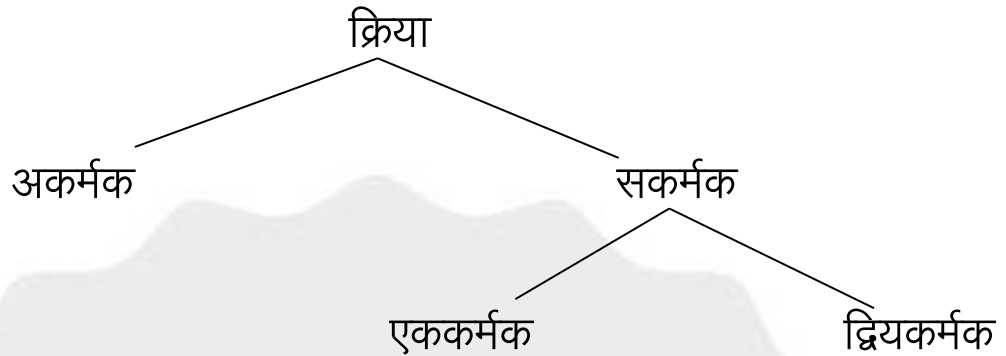
पानी में क्या मिला है।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्द को कहते हैं – सर्वनाम
- सर्वनाम के कितने भेद होते हैं – 6
- मुझे किस प्रकार का सर्वनाम है – उत्तम पुरुष
- 'यह घोड़ा अच्छा है' में 'यह' क्या है – सर्वनाम
- 'घर में कोई है' में 'कोई' किस प्रकार का सर्वनाम है – अनिश्च वाचक
- 'वह आप खा लेता है' में सर्वनाम है – निजवाचक सर्वनाम
- पुरुषवाचक सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं – 3 प्रकार
- कौन का प्रयोग किसके लिए होता है – सजीवों के लिए
- उन्हें कुछ दे दो, में कैसा सर्वनाम है – अनिश्चय वाचक सर्वनाम
- आप कहाँ जा रहे हैं। में आप क्या है – पुरुषवाचक सर्वनाम

क्रिया

जिसमें किसी काम का करना या होना पाया जाता है। क्रिया कहते हैं।



सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म की संभावना हो तथा जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता हो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

सकर्मक – क्या, किसे, किसको

जैसे – राम आम खाता है।

मोहन दूध पीता है।

सीता गीत गाती है।

मोहन पढ़ता है।

अकर्मक क्रिया – अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका प्रभाव कर्ता पर पड़ता है।

जैसे – मोहन खड़ा है।

राधा रोती है।

मोहन हंसता है।

क्रिया के कुछ अन्य भेद –

1. पूर्ण कालीक क्रिया – जब कर्ता पहली क्रिया समाप्त करके दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है तो पहली क्रिया पूर्णकालीक क्रिया कहा जाता है।

‘जब दो क्रियाएँ एक साथ हो तो पहली क्रिया पूर्ण कालीक होगी’

जैसे – राम भोजन करके सो गया।

वह पत्र लिख कर सो गया।

सोर सुनकर वह जाग गई।

2. नामवाची क्रिया – संज्ञा या विशेषण क्रिया से नाम बोधक क्रिया जुड़ने से नामबोधक क्रिया बनता है।

जैसे – बात – बतियाना
लाठी – लठीयाना
जूता – जूतियाना
लात – लतियाना

3. संयुक्त क्रिया – जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

जैसे - वह घर से आ गया।
वह खाने लगा।
मैंने किताब पढ़ ली।

4. सहायक क्रिया – वह क्रिया जो मुख्य क्रिया में सहायक बने व उसका काम करे।

जैसे - राम घर जा रहा है।
मैं घर जाता हूँ।
मैं कल पुस्तक पढ़ रहा था।

5. प्रेरणार्थक क्रिया – जब क्रिया स्वं ना करके किसी दूसरे से करवायी जाय।

भेजना – भिजवाना
मांगना – मंगवाना
लिखना – लिखवाना

6. क्रियार्थक संज्ञा – जब कोई क्रिया संज्ञा की भाँति व्यवहार में आती है तो उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं।

जैसे - टहलना, एक अच्छा व्यायाम है।
तैरना, एक अच्छी आदत है।
धूम्रपान, करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- काम का नाम बताने वाले शब्द को कहते हैं – क्रिया
- जिस शब्द से किसी कार्य का होना समझा जाए, उसे कहते हैं – क्रिया
- 'चिड़िया आकाश में उड़ रही है' इस वाक्य में 'उड़ रही' क्रिया किस प्रकार की है – सकर्मक क्रिया
- जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उसे क्या कहते हैं – क्रिया विशेषण
- रचना की पुष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं -2
- क्रिया का मूल रूप कहलाता है – धातु
- 'गेहूँ पिस रहा है' किस प्रकार की क्रिया है – अकर्मक
- 'सुरेश ने मुकेश को खिलौना दिया' में कितने कर्म हैं – 2 कर्म
- काल के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं – 3
- किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं रहने वाली धातु कहलाती हूँ – मूल धातु

EXAMपुर

TIPS AND TRICKS

विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

विशेषण – जो विशेषता बताये।

विशेष्य – जिसकी विशेषता बताई जाए।

वह अच्छा लड़का है।

विशेषण विशेष्य

विशेषण के भेद – विशेषण के मुख्यतः 4 भेद होते हैं –

1. गुणवाचक
2. परिणामवाचक
3. संख्यावाचक
4. सार्वनमिक

1. गुण वाचक विशेषण – जिन शब्दों के द्वारा संज्ञा के गुण अथवा दोष का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे –

गुण – ईमानदारी, परिश्रम, मिलनसार, बुद्धिमान, पापी, दुष्ट, चतुर, पवित्र, अयोग्य।

दशा – रोगी, निरोगी, मोटा, पतला, धनवान, स्वस्थ, बलिष्ठ, कमजोर।

स्थान – जपानी, चीनी, भारतीय, मैदानी, पहाड़ी, पंजाबी

रंग – काली, नीली, पीली आदि।

आकार – छोटा, नाटा, आयताकार, पतला, चौड़ा।

स्वाद/ गंध – फीका, तीखा, सुगंधित, गंधहीन, खट्टा।

रूप – पतला, मोटा, कमजोर, अस्वस्थ, स्वस्थ।

2. परिणाम वाचक विशेषण – जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिणाम की जानकारी होती है, उसे परिणाम वाचक विशेषण कहते हैं। परिणाम वाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं –

i. **निश्चित परिणामवाचक** – जिन विशेषण शब्दों संज्ञा की निश्चित मात्रा का बोध हो, उसे निश्चित परिणाम वाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - दस किलो सन्तरा ।

पाँच लीटर दूध ।

2 मीटर कपड़ा लाओ ।

ii. अनिश्चित परिणाम वाचक – थोड़ी सी, सब्जी ले आओ

उसने बहुत सारा खाना बरबाद कर दिया ।

3. संख्यावाचक विशेषण – जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उसे संख्या वाचक विशेषण कहते हैं ।

जैसे - पहला, चौथा, घोड़े, कई, दसवां आदि ।

संख्यावाचक विशेषण भी दो प्रकार के होते हैं –

i. निश्चित संख्यावाचक – एक, तीन, चार, दस, हजार आदि ।

ii. निश्चित संख्यावाचक – कुछ, थोड़े, अनेक, कई, काफी आदि ।

4. सार्वनामिक विशेषण – जो सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं ।

जैसे - वह लड़की बहुत होशिया है ।

इस किताब को जरूर बढ़िये ।

उनके घर आज कार्यक्रम है ।

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

- विशेषण के मुख्यतः कितने भेद होते हैं – 4
- भाषा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द कहे जाते हैं – विशेषण
- 'भला' किस प्रकार का विशेषण है – गुणवाचक
- 'थोड़ा' किस प्रकार का विशेषण है – परिणाम बोधक
- कुछ आदमी वहाँ खड़े थे मैं कुछ किस प्रकार का विशेषण होगा – अनिश्चित संख्यावाचक
- 'पशु' शब्द का विशेषण क्या है – पाश्विक
- 'मानव' शब्द से विशेषण क्या होगा – मानवी
- 'उत्कर्ष' का विशेषण क्या होगा – उत्कृष्ट
- 'संस्कृति' का विशेषण होगा – सांस्कृतिक
- 'आलस्य' शब्द का विशेषण है – आलसी

लिंग

संज्ञा के जिस रूप से हमें यह पता चलता है कि वह स्त्री है या पुरुष तो उसे लिंग कहते हैं।

1. पुलिंग
2. स्त्रीलिंग

1. पुलिंग – जिन शब्दों में अकारान्त शब्द हो उसे पुलिंग कहते हैं। जैसे – मटका, कपड़ा, घोड़ा,

आ, आव, आपा, पन, पा, आदि प्रत्यय से जुड़े शब्द पुलिंग होते हैं।

जैसे – मोटापा, बुढ़ापा

माह के नाम – चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ

दिन के नाम – सोमवार, मंगलवार, बुधवार

तारों व ग्रहों के नाम – सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति (अपवाद – पृथ्वी स्त्रीलिंग)

पहाड़ों के नाम – हिमालय, सतुपड़ा, विंध्यांचल

देशों के नाम – हिन्दुस्तान, पाकिस्तान (श्री लंका – स्त्रीलिंग)

धातुओं के नाम – स्वर्ण, ताँबा, पीतल (अपवाद – चांदी-स्त्रीलिंग)

रत्नों के नाम – हीरा, मोती, पन्ना

अन्न के नाम – गेहूँ, चना, चावल, मटर, जौ (अपवाद – अरहर, मूँग, मकई)

वृक्षों के नाम – आम, बरगद, महुआ (अपवाद – इमलि)

भाववाचक शब्द – आव, पन, त्व, पा आदि अन्त में लगे। जैसे – खिचाव, बचपन, महत्व, बुढ़ापा

Imp – घी, दही, हाथी, पानी, शरबत

अंग – मुह, हाथ, कान, गला

✓ जिन शब्दों के अन्त में आय, आर, आव, आस, आवा प्रत्यय जुड़ते हैं वे शब्द पुलिंग होते हैं।

अध्याय	संसार	विचार	बहाव	दिखावा	उपाय
विस्तार	उल्लास	ठहराव	पहलावा	अन्याय	विचार

इकारान्त शब्द

कवि, हरि

रवि, ऋषि

मुनि

कुछ ईकारान्त शब्द

दही

हॉथी

मोती

पानी

घी

✓ कुछ उकारान्त शब्द –

बन्धु, सिन्धु, इन्दु, प्रभु, साधु

✓ कुछ उकारान्त शब्द –

गेहूं, घुघरू, आंसू

✓ त्रकारान्त शब्द –

अस्त्र, चित्र, शस्त्र, पवित्र, इत्र, गोत्र, आदि ।

✓ कुछ खकारान्त शब्द –

दुख, सूखा, मुख, पंख, शंख, लेख आदि ।

✓ जकारान्त शब्द –

जलज, मनोज, जहाज, बाच, सूरज, वारिज समाज

2. स्त्रीलिंग – शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी या वस्तु के स्त्री जाति के होने का बोध होते हैं, तो उसे स्त्रीलिंग कहत हैं । जैसे – सीता, रीता, गीता, मीता, सरिता, कविता आदि ।

✓ ईकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं – उदासी, चिढ़ी, खट्टी ।

✓ नदियों के नाम –

गंगा, यमुना, नर्मदा, बेताव (अपवाद – सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सोन)

✓ तिथियों के नाम –

दूज, तीज, चौथ, अमावस्या, पूर्णिमा ।

✓ भाव वाचक शब्द –

(न्त, ता, आई, वट, हट) गढ़न्त, अमुष्यता, सिलाई, सजावट, घबराहट

✓ विशेष शब्द –

खीर, जल, केसर

✓ भाषाए –

हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी

✓ अंग –

गरदन, कमर, जीभ, उंगली, छाती, आंख

✓ सैदेव स्त्रीलिंग –

लोमड़ी, गलहरी, मक्खी, मछली, छिपकली, तितली, कोयल

✓ सदैव पुलिंग –

मच्छर, कौआ, खरगोश, तोता, बिच्छू, बेड़ियाँ, उल्लू।

EXAM गुरु

TIPS AND TRICKS

वचन

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं –

1. एक वचन – जिनसे एक व्यक्ति, एक वस्तु, एक स्थान का बोध हो, एक वचन कहते हैं।

2. बहुवचन – एक से अधिक का बोध हो तो।

कुछ शब्द हमेशा बहुवचन होते हैं –

प्राण, दर्शन, हाथ, पैर, हस्ताक्षर, बाल, होश, दाँत, नेत्र, कान, हाथ, पैर, आँसू, ओष्ठ, लोग, सदैव बहुवचन हैं।

कुछ शब्द हमेशा एक वचन होते हैं –

पुलिस, वायु, बुढ़ापा, जनता, भीड़, पानी, सोना, सामग्री आदि।

अकारान्त शब्द को छोड़कर सारे बहुवचन होते हैं –

लड़का – लड़के

कुत्ता – कुत्ते

गधा – गधे

तोता – तोते

कमरा – कमरे

पंखा – पंखे

बकरा – बकरे

पत्र लेखन

पत्र – लिखित रूप में किसी के सामने अपने विचार रखना, अभिव्यक्ति रखना पत्र कहलाता है।

पत्र के प्रकार – पत्र साधारणतः निम्न प्रकार के होते हैं –

1. **व्यक्तिगत पत्र** – इसके अन्तर्ग मित्र, प्रेमी-प्रेमिका, सभी इत्यादि आते हैं।
2. **परिवारीक पत्र** – माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री, चाचा-चाची इत्यादि।
3. **सम्बन्धी पत्र** – सास-ससुर, नाना-नानि, मामा-मामी इत्यादि।
4. **अधिकारीक पत्र** – जो अधिकारियों के प्रति लिखि जाती है –

जैसे – प्रार्थना पत्र, नौकरी के लिए आवेदन, सुझाव व शिकायत पत्र

5. **शासकीय पत्र** – जो किसी पदाधिकारी की ओर से अथवा उसको लिखा जाता है –

ये दो प्रकार के होते हैं 

- सरकारी – जो पूर्णतया शासकीय हो
- अर्द्ध सरकारी – जो शासकीय होते हुए भी व्यक्तिगत हो

6. **व्यापारिक पत्र** – जो व्यापारिक मामलो के सम्बंध में व्यापारियों या कम्पनि को लिखते हैं।
7. **शोक पत्र**
8. **अभिन्नदन पत्र**
9. **धन्यवाद पत्र**
10. **बधाई पत्र**
11. **प्रेस विज्ञप्ति**
12. **निमंत्रण पत्र**

पत्र लेखन के आवश्यक तत्व

उद्देश्य – पत्र लेखन का प्रारम्भिक तत्व

भाषा शैली – संबोधित व्यक्ति के अनुरूप होना

सहजता – आसानी से समझ में आये।

शिष्टाचार – विनम्रता व गरिमामय भाषा का प्रयोग

व्याकरण – सबसे ध्यान देने योग्य बात

सुलेख – पत्र को प्रभावी बनाने के लिए

प्रारूप – पत्र में संबोधन के अनुरूप (शासकीय पत्रों हेतु भाषा शैली)

संक्षिप्ता –

पत्र के भाग –

आरम्भ – अभिवादन, दिनांक, स्थान आदि

मध्य – पत्र लिखने का उद्देश्य तथा तथ्यों से अवगत करना

अन्त – प्रेषक का विवरण, अपेक्षाएं, धन्यवाद, ज्ञापन, मंगलकामना आदि का समावेश

शासकीय पत्र के प्रकार –

1. शासनादेश (Government Order)
2. अर्द्धशासकीय पत्र (Semi - official)
3. परिपत्र (Circular letter)
4. कार्यालय आदेश (official memorandum)
5. अधिसूचना (Notification)
6. संकल्प (Resolution)
7. अनुस्मारक पत्र (Reminder)
8. प्रेस विज्ञप्ति (Press - Communication)
9. पृष्ठांकन पत्र (Endowment letter)
10. निविदा (Tender)
11. तार (Telegram)
12. शासकीय पत्र (Unofficial letter)

सरकारी पत्र (शासकीय/ राजकीय/ शासनादेश)

सरकारी पत्र निम्नलिखित प्रकार के पत्राचारों में प्रयुक्त होता है –

1. एक देश की सरकार दूसरे देश की सरकार को ।
2. केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार को ।
3. केन्द्र सरकार द्वारा राज्यों को या कई राज्यों को ।
4. राज्य सरकार द्वारा दूसरे राज्य के कई अन्य राज्यों को ।
5. एक सरकारी विभाग द्वारा दूसरे कई अन्य सरकारी विभाग को ।
6. एक सरकारी कार्यालय द्वारा दूसरे कार्यालय या विभाग को ।

“सरकारी प्रयोजन हेतु लिखे जाने वाले समस्त किसी पदाधिकारी या सामूहिक रूप से कई पदाधिकारियों करके लिखा जाता है शासकीय पत्र कहते हैं ।”

शासकीय पत्र की विशेषताएं –

1. पूर्णतः औपचारिक, व्यक्तिगत बातों का उल्लेख नहीं ।
2. निर्धारित प्रारूप में लिखा जाता है, सरकारी पत्र के प्रकार के अनुसार ही प्रारूप निश्चित ढांचे में ढला होता है यह नियम, उपनियम तथा तथ्यपरक सामग्री को समाहित करता है ।
3. सरकारी पत्र राजभाषा या वैकल्पिक राजभाषा में लिखा जाता है ।
4. इसमें आदेश या सूचना (पैराग्राफ क्रमांक) अंकित करते हुये लिखा जाता है ।
5. यह सदैव उत्तम पुरुष शैली में लिखा जाता है ।
6. सरकारी पत्रों में संक्षिप्तता का विशेष ध्यान दिया जाता है ।

शासकीय पत्र की संरचना – सरकारी पत्र मुख्यतः पांच भागों में विभाजित होता है।

1. पत्रांक – पत्र संख्या, अनुभाग, वर्ष, तिथि, स्थान
2. सम्बोधन विषय – प्रेषक, प्रेषित, विषय, सम्बोधन
3. मुख्य भाग – प्रसंग/ भूमिका, तथ्य तथा कारणों का उल्लेख, तर्क एवं निष्कर्ष, परिसम्पत्ति
4. निर्देश/ अनुरोध/ निष्कर्ष/ समापन
5. पृष्ठांकन

शासनादेश का प्रारूप

पृष्ठ संख्या (यदि एक से अधिक पृष्ठ हो तो सबसे उपर)

प्रेषक

पत्र संख्या ____/____/____

(सबसे उपर दायी ओर)

_____।

सेवा में,

अनुभाग – 2

विषय:

लखनऊ, दिनांक _____

महोदय,

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि –

संलग्नक:

(अगर पत्र के साथ कुछ जरूरी भेजना हो)

भवदीय

(XYZ)

(नाम के साथ कोई सम्बोधन नहीं)

संख्या _____

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. _____

आज्ञा से

2. _____

(XYZ)

पद एवं जनपद नाम

अर्द्ध शासकीय पत्र

अपने समकक्ष या अपने कनिष्ठ स्तर के अधिकारी को प्रस्तावित कार्य के लिए तथा कार्य को शीघ्र निपाने के लिए प्रयोग किया जाता है। उसे राजभाषा में अर्द्ध शासकीय या अर्द्ध सरकारी पत्र कहते हैं। जो सरकारी अधिकारियों के मध्य सरकारी भाषा में लिया जाता है। सरकारी पत्र का यह प्रारूप सरकारी अधिकारियों के मध्य विचार, सम्मति, जानकारी या सूचना के आदान प्रदान के लिए अनौपचारिक रूप से लिखा जाता है। इस पत्र को प्रयोग निम्न उद्देश्यों के लिए होता है –

1. सरकारी सार्य विधि की औपचारिकता के बिना ही अधिकारियों द्वारा परस्पर विचार-विनिमय करने हेतु।
2. जब पत्र प्राप्त कर्ता का ध्यान किसी विशेष विषय पर आकृष्ट कराना
3. जब पत्र प्राप्तकर्ता के कार्यालय ने उक्त कार्यालय ने उक्त विभाग से कार्यवाही में अनावश्यक विलम्ब हुआ हो व अनुस्मारक को भिजवाने में उत्तर प्राप्त ना हुआ हो।
4. जब प्रेषित या उसके कार्यालय को अभिमत, उसके विभागीय अनुदेश, निर्णय आदि शीघ्र प्राप्त करने की जरूरत हो।
5. अर्द्ध सरकारी पत्र में लेखक का व्यक्तित्व छलकता है व दूसरे व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाला जाता है।

रचना शैली –

- ✓ अर्द्ध सरकारी पत्र उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष) एकवचन में मित्रता पूर्ण भाव में लिखा जाता है।
- ✓ सम्बोधन के लिए प्रिय, प्रियवर, प्रियसी, प्रिय श्री.....जी, महोदय आदि लिखे जाते हैं।
- ✓ निर्देश में आपका/ आपका सद्भावी शब्द का प्रयोग।
- ✓ प्रेषक अधिकारी केवल अपना हस्ताक्षर करता है पद का उल्लेख नहीं करता।
- ✓ हस्ताक्षर के बाद पत्र के बायीं ओर प्रेषिता का नाम, पद नाम तथा पूरा पता लिखा होता है।
- ✓ भाषा आदर सूचक, सम्मान सूचक होती है व उसमें आदेशात्मक वाक्य का प्रयोग कदापि नहीं होता है।

- ✓ शीर्षक वाले भाग में पृष्ठ के दायी ओर पत्र संख्या, कार्यालय का नाम व पता व तारीख लिखि जाती है। प्रेषक का व प्राप्तकर्ता का पता नहीं होता।
- ✓ अर्द्धशासकीय पत्रों पर पता लिखते समय व्यक्तिगत नाम का प्रयोग होता है।
- ✓ गोपनीय विषयों पर लिफोफे पर गोपनीय शब्द लिखा जाता है।

अर्द्ध सरकारी पत्र सं.

कखग

जिलाधिष कार्यालय

जिलाधीष

गोरखपुर

प्रिय श्री क ख ग

.....

श्री क ख ग

भवनिष्ठ

पुलिस अधिक्षक

नाम :

गोरखपुर

.....

अर्द्धसरकारी पत्र के अंग अथवा भाग –

- ✓ पत्र के शीर्ष के मध्य में अर्द्धशासकीय पत्र संख्या लिखि जाती है।
- ✓ इसके बाद बायी ओर प्रेषक अधिकारी का नाम व पद नाम लिखा जाता है। इसके सामने एकदम दायी तरफ कार्यालय पता लिखा होता है।
- ✓ इसके बाद नीचे दायी ओर स्थान व दिनांक लिखा जाता है।
- ✓ इसके बाद मध्य में किसी अर्द्धशासकीय पत्र में विषय संक्षिप्ता में लिखा जाता है। इन पत्रों में विषय लिखना अनिवार्य नहीं है।
- ✓ अन्त में समापन सूचक शब्द आपका/ भवनिष्ठ लिखकर पत्र समाप्त किया जाता है।

सरकारी व अर्द्ध सरकारी पत्र में अन्तर

सरकारी पत्र	अर्द्ध सरकारी पत्र
ये पत्र कार्यालय से एक दूसरे कार्यालय को लिखे जाते हैं।	ये पत्र एक अधिकारी द्वारा दूसरे अधिकारी को लिखा जाता है न कि एक विभाग से दूसरे विभाग को।
यह सरकार के किसी नीतिगत निर्धारण निर्णय या समस्या / निदान से सम्बंधित होता है।	यह पत्र एक अधिकारी से किसी दूसरे अधिकारी को किसी विशेष तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए लिखा जाता है।
भाषा स्पष्ट होती है।	भाषा स्पष्ट ने होकर समझाकर कहने वाली होती है।
एक निश्चित साँचे में आंबध होता है इसकी सामग्री तथ्यपरक व स्पष्ट होती है	स्वरूप व्यक्तिगत होता है, मित्रतापूर्ण भाषा में लिखा जाता है।
सदैव अन्य पुरुष में लिखा जाता है	सदैव उत्तम पुरुष व मध्यम पुरुष में लिखा जाता है।
इसमें प्रेष्य/ प्रेषिती का पदनाम का उल्लेख होता है, व्यक्तिगत नाम का नहीं	प्रेष्य/ प्रेषिती का व्यक्तिगत नाम लिखा जाता है।
सम्बोधन महोदय से करते हैं।	सम्बोधन प्रिय श्री अथवा निकटता सूचक शब्द से होता है।

परिपत्र - यह पत्राचार का एक प्रकार है। वस्तुतः एक ऐसा पत्र जिसके द्वारा एक ही सूचना, आदेश या अनुदेश को सभी संबंधित व्यक्तियों या कार्यालयों को प्रेषित कर दी जाती है व उन्हें एक साथ अवगत कराया जाता है ऐसे पत्र की अनेक प्रतियां तैयार की जाती हैं।

विशेषता –

- ✓ परिपत्र की दिशा सदैव वरिष्ठ से कनिष्ठ कार्यालय की ओर होती है श्रम, समय व धन की बचत होती है।

- ✓ परिपत्र द्वारा समान सूचनाओं का संप्रेषण एक साथ कई अनेक कार्यालयों को किया जाता है।
- ✓ परिपत्र में संक्षिप्तता व वस्तुनिष्ठता होती है।
- ✓ भाषा औपचारिक होती है व इसे राजभाषा में लिखा जाता है।

अनुस्मारक पत्र – जब किसी पत्र का उत्तर समयावधि में प्राप्त नहीं होता है तो सम्बन्धित अधिकारी को पुनः याद दिलाने के लिए उसे अनुस्मारक पत्र लिखा जाता है। इसे ध्यानाकर्षण पत्र भी कहते हैं।

विशेषताएं –

- ✓ साधारणतः पत्र भेजने की तिथि से एक माह के बाद स्मारक पत्र भेजा जाता है।
- ✓ अनुस्मारक पत्र सरकारी पत्र व अर्द्धसरकारी पत्र दोनों रूप में लिखा जाता है।
- ✓ भारत सरकार व उच्च न्यायालय को संबोधित अनुस्मारक उस अफसर के आदेश व हस्ताक्षर से भेजा जाता है जो सहसचिव के पद के नीचे हो।

EXAM गुरु

TIPS AND TRICKS

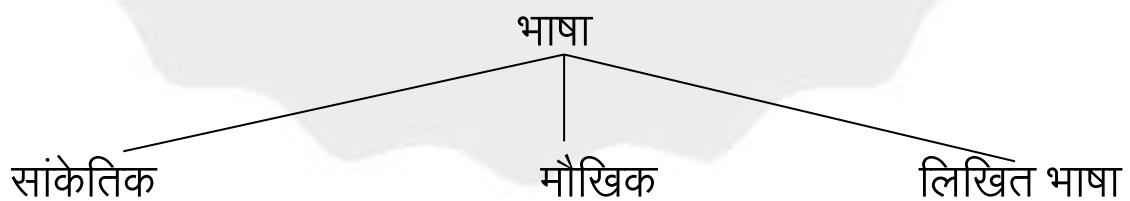
हिन्दी साहित्य

- ✓ हिन्दी शब्द फारसी ईरानी भाषा का है।
- ✓ हिन्दी सिन्धी शब्द का रूपान्तर है।
- ✓ हिन्दी की मूल व्युत्पत्ति शौरसेनी अप्रभंश से मानी जाती है।
- ✓ हिन्दी के लिए हिन्दवी शब्द का प्रयोग अमीरि खुसरो ने किया।
- ✓ हिन्दी के लिए हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग M. K. Gandhi ने किया।

हिन्दी कुल 10 प्रदेशों में पढ़ी जाती है –

उत्तर प्रदेश	दिल्ली
बिहार	उत्तराखण्ड
मध्य प्रदेश	झारखण्ड
राजस्थान	छत्तीसगढ़
हरियाणा	हिमाचल प्रदेश

- ✓ मनुष्य की व्यक्ति वाणी ही भाषा है।
- ✓ डॉ. बाबू राम सक्सेना के अनुसार भाषा विचार विनिमय का माध्यम है।
- ✓ जब हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं व दूसरों के विचारों को स्वयं समझते हैं तो उसे भाषा कहते हैं।
- ✓ भाषा परिवर्तनशील होती है। भाषा पैत्रिक सम्पत्ति ना होकर एक अर्जित सम्पत्ति है।
- ✓ कबीर ने भाषा को नदी के समान बताया है।



मौखिक भाषा –

- ✓ अन्तः व्यक्तिगत विचार (खुद से बात करना)
- ✓ अन्तः व्यक्तिगत संचार (दो लोगों से बातचीत करना)
- ✓ समूह संचार

✓ जन संचार (एक जगह की बात जन-2 तक पहुंचाना। टेलीविजन)

लिखित भाषा – स्थायी भाषा होती है।

✓ हिन्दी का पहला कवि – सरहपा (राहुल सांकृत्यायन)

स्वयंभू (राम कुमार वर्मा)

चन्द्रबरदाई (रामचन्द्र शुक्ल)

अब्दुरहमान (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

✓ हिन्दी खड़ी बोली का पहला कवि – अमीर खुसरो

✓ अमीर खुसरो – हिन्दी शब्द के लिए हिन्दवी शब्द का प्रयोग किया

– मूल नाम – अब्दुल हसन

– गुरु – निजामुद्दीन औलिया

– तोता – ए – हिन्द कहा गया

✓ इनकी एक रचना है – खालिक बारी

✓ जनता के मनोरंजन के लिए पहेलिया, गजले, मुकतिया व दो सुखने लिखे।

TIPS AND TRICKS

बार – बार पूछे जाने वाले प्रश्न

➤ हिन्दी की पहली रचना – श्रावकाचार (आचार्य देवसेन लेखक)

➤ हिन्दी खड़ी बोली गद्य की पहली रचना – चन्द छन्द बरनन की महिमा (कवि गंग)

➤ हिन्दी का पहला महाकाव्य – पृथ्वी राज रासो

➤ अवधी भाषा का पहला महाकाव्य – पद्मावत (मलिक मु० जायसी)

➤ खड़ी बोली का पहला महाकाव्य – प्रिय प्रवास (अयोध्या सिंह उपाध्याय)

➤ हिन्दी का प्रथम नाटक – नहुस (गोपाल चन्द्र गिरिधर दास)

➤ हिन्दी का पहला उपन्यास – परीक्षा गुरु (लाल श्री निवास दास)

सामाजिक उपन्यास – भाग्यवती (श्रद्धाराम फुल्लेरी)

- हिन्दी का पहला तिलस्मी उपन्यास – चन्द्रकांता (देवकी नन्दन खत्री)
- हिन्दी की पहली कहानी – इन्दुमती (किशोरी लाल गोस्वामी)
- रानी केतकी की कहानी – ईथा उल्ला खां
- हिन्दी की पहली एकांकी – एक घूंट (जय शंकर प्रसाद)
- हिन्दी का पहला गीत नाट्य – करुणालय (जयशंकर प्रसाद)
- हिन्दी का पहला समाचार पत्र – उद्धन्त मार्तण्ड (साप्ताहिक), 30 मई 1826 कलकत्ता से, सम्पादक – जुगुल किशोर, 30 मई को पत्रकारिता दिवस
- हिन्दी का पहला दैनिक समाचार पत्र – सुधा दर्पण, सम्पादक-श्याम सुन्दर सेना
- हिन्दी की पहली आत्माकथा – अर्द्धकथनाक (बनारसी दास जैन)
- हिन्दी का पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार – चिदम्बरा (लेखक-सुमित्रानन्दन पन्त)
- हिन्दी का पहला ज्ञानपीठ पाने वाली महिला कवियित्री – महादेवी वर्मा (रचना-यामा)
- हिन्दी का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाली रचना – हिम तरंगिनी (माखन लाल चतुर्वेदि – एक भारतीय आत्मा)
- हिन्दी का पहला व्यास सम्मान पाने वाले कवि – राम विलास शर्मा (भारत के प्राचीन भाषा परिवार व हिन्दी)
- हिन्दी का पहला यात्रा साहित्य – सर्यू पार की यात्रा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)
- हिन्दी का पहला संस्मरण – पदम पराग (पदम सिंह शर्मा)
- हिन्दी का पहला रेखाचित्र – बोलती प्रतिमा (श्री राम शर्मा)
- हिन्दी का पहला रिपोर्ताज – लक्ष्मीपुरा (शिवदान सिंह चौहान)

पुरस्कार

हिन्दी साहित्य में पुरस्कार प्राप्त प्रमुख रचनाएँ

ज्ञानपीठ पुरस्कार		
साहित्यकार	रचना	वर्ष (क्रम)
पंत	चिदंबरा	1968 ई. (4था)
दिनकर	उर्वशी	1972 ई. (8वाँ)
अज्ञेय	कितनी नावों में कितनी बार	1978 ई. (14वाँ)
महादेवी वर्मा	यामा	1982 ई. (18वाँ)
नरेश मेहता	सम्पूर्ण साहित्य	1992 ई. (28वाँ)
निर्मल वर्मा (पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से)	सम्पूर्ण साहित्य	1999 ई. (35वाँ)
कुँवर नारायण	सम्पूर्ण साहित्य	2005 ई. (41वाँ)
अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल	सम्पूर्ण साहित्य	2009 ई. (45वाँ)
केदारनाथ सिंह	सम्पूर्ण साहित्य	2013 ई. (49वाँ)
कृष्णा सोबती	सम्पूर्ण साहित्य	2017 में.
नोट – वर्ष 1984 ई. के बाद यह पुरस्कार लेखक के समग्र योगदान पर दिया जाने लगा है।		

व्यास सम्मान		
साहित्यकार	रचना	वर्ष (ई. में)
डॉ. रामविलास शर्मा	भारत के भाषा परिवार और हिन्दी	1991

शिवप्रसाद सिंह	नीला चाँद (उपन्यास)	1992
गिरिजा कुमार माथुर	मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य)	1993
धर्मवीर भारती	सपना अभी भी (काव्य)	1994 ई.
कुंवर नारायण	आत्मजयी (काव्य)	1995 ई.
रामस्वरूप चतुर्वेदी	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	साहित्येतिहास
केदारनाथ सिंह	उत्तर कबीर व अन्य कविताएं (काव्य)	1997
गोविंद मिश्र	पांच आंगनों वाला घर (उपन्यास)	1998 ई.
श्री लाल शुक्ल	विश्रामपुर का संत	1999
गिरिराज किशोर	पहला गिरमिटिया (उपन्यास)	2000
रमेश चन्द्र शाह	आलोचना का पक्ष (आलोचना)	2001
कैलाश वाजपेयी	पृथ्वी का कृष्ण पक्ष (काव्य)	2002
चित्रा मुद्गल	आवां (उपन्यास)	2003
मृदुला गर्ग	कठगुलाब (उपन्यास)	2004
चंद्रकांता	कथा सतीसर (उपन्यास)	2005
परमानंद श्रीवास्तव	कविता का अर्थात् (आलोचना)	2006
कृष्णा सोबती	समय-सरगम	2007
मन्नू भंडारी	एक कहानी यह भी (आत्मकथा)	2008
अमरकांत	इन्ही हथियारों से	2009

	(उपन्यास)	
विश्वनाथ तिवारी	फिर भी कुछ रह जाएगा (काव्य)	2010
राम दरश मिश्र	आम के पत्ते (काव्य)	2011
नरेन्द्र कोहली	न भूतो न भविष्यति (उपन्यास)	2012
विश्वनाथ त्रिपाठी	व्योमकेश दरवेश (जीवनी)	2013
कमल किशोर गोयनका	प्रेमचन्द की कहानियों का	काल क्रमानुसार अध्ययन
सुनीता जैन	क्षमा (काव्य संग्रह)	2015
सुरेन्द्र वर्मा	कटना क्षमा का वृक्ष पद्म पंखुरी की धार से	2016
ममता कल्ला	सुखम दुखम	2017

साहित्य अकादमी पुरस्कार

साहित्यकार	रचना	वर्ष (ई. में)
माखनलाल चतुर्वेदी	हिमतरंगिनी (काव्य)	1955 ई.
वासुदेवशरण अग्रवाल	पद्मावत संजीवनी व्याख्या (टीका/व्याख्या)	1956
आचार्य नरेन्द्र देव	बुद्ध धर्म दर्शन	1957
राहुल सांकृत्यायन	मध्य एशिया का इतिहास	1958
दिनकर	संस्कृति के चार अध्याय	1959
पंत	कला और बूढ़ा चांद (काव्य)	1960
भगवतीचरण वर्मा	भूले-बिसरे चित्र (उपन्यास)	1961

अमृतराय	कलम का सिपाही (जीवनी)	1963
अज्ञेय	आंगन के पार द्वार (काव्य)	1964
नगेन्द्र	रस सिद्धान्त (समीक्षा)	1965
जैनेन्द्र	मुक्तिबोध (उपन्यास)	1966
अमृतलाल नागर	अमृत और विष (उपन्यास)	1967
हरिवंशराय बच्चन	दो चट्टानें (काव्य)	1968
श्री लाला शुक्ल	राग दरबारी (उपन्यास)	1969
रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना (आ)	1970
डॉ. नामवर सिंह	कविता के नये प्रतिमान (आ)	1971 ई
भवानी प्रसाद मिश्र	बुनी हुई रस्सी (काव्य)	1972
हजारी प्रसाद द्विवेदी	आलोक पर्व (निबंध)	1973
शिवमंगल सिंह	मिट्टी की बारात (काव्य)	1974
भीष्म साहनी	तमस (उपन्यास)	1975
यशपाल	तेरी मेरी उसकी बात (उपन्यास)	1976 ई
शमशेर	चुका भी नहीं हूं मैं (काव्य)	1977 ई.
भारत भूषण अग्रवाल	उतना बस सूरज हूं (काव्य)	1978
धूमिल	कल सुनना मुझे (काव्य)	1979
कृष्णा सोबती	जिंदगीनामा (उपन्यास)	1980
त्रिलोचन शास्त्री	ताप के ताये हुए दिन	1981

	(काव्य)	
हरिशंकर परसाई	विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य)	1982
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	खूंटियो पर टंगे लोग (काव्य)	1983 ई.
रघुवीर सहाय	लोग भूल गए हैं (काव्य)	1984
निर्मल वर्मा	कव्वे और काला पानी	1985
केदारनाथ अग्रवाल	अपूर्व (काव्य)	1986
श्रीकांत वर्मा	मगध (काव्य)	1987
नरेश मेहता	अरण्य (काव्य)	1988
केदारनाथ सिंह	अकाल में सारस (काव्य)	1989
शिव प्रसाद सिंह	नीला चाँद (उपन्यास)	1990
गिरिजाकुमार माथुर	मैं वक्त के हूँ सामने	1991
गिरिराज किशोर	ढाई घर (उपन्यास)	1992
विष्णु प्रभाकर	अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास)	1993
अशोक वाजपेयी	कहीं नहीं वहीं (काव्य)	1994
कुंवर नारायण	कोई दूसरा नहीं (काव्य)	1995
सुरेन्द्र वर्मा	मुझे चाँद चाहिए (उपन्यास)	1996
लीलाधर जगूड़ी	अनुभव के आकाश में चाँद (काव्य)	1997
अरुण कमल	नये इलाके में (काव्य)	1998
विनोद कुमार शुक्ल	दीवार में एक खिड़की रहती थी (उपन्यास)	1999
मंगलेश डबराल	हम जो देखते हैं (काव्य)	2000
अलका सरावगी	कलिकथा: वाया बाईपास (उपन्यास)	2001

राजेश जोशी	दो पंक्तियों के बीच (काव्य)	2002
कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान (उपन्यास)	2003
वीरेन डंगवाल	दुष्टक्र में स्रष्टा (काव्य)	2004
मनोहर श्याम जोशी	क्याप (उपन्यास)	2005
ज्ञानंद्रपति	संशयात्मा (काव्य)	2006
अमरकांत	इन्ही हथियारों से (उपन्यास)	2007
गोविंद मिश्र	कोहरे में कैद रंग (उपन्यास)	2008
कैलाश वाजपेयी	हवा में हस्ताक्षर (काव्य)	2009
उदय प्रकाश	मोहन दास (कहानी)	2010
काशीनाथ सिंह	रेहन पर रघू (उपन्यास)	2011
चन्द्रकांत देवताले	पत्थर फेंक रहा हूं (काव्य)	2012
मृदुला गर्ग	मिलजुल मन (उपन्यास)	2013
रमेश चन्द शाह	विनायक (उपन्यास)	2014
रामदरश मिश्र	आग की हंसी (काव्य)	2015
नासिरा शर्मा	परिजात (उपन्यास)	2016
रमेश कुन्तल	विश्व मिथक सरित सागर	2017